श्री रविव्रत विधान

आशीर्वाद एवं संपादन

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचयित्री

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक :

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

कचनेर (गट नं. 11-12) औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

Email : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम	:	**श्री रविव्रत उद्यापन विधान**
आशीर्वाद	:	**गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव** **वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव**
आशीर्वाद एवं संपादन	:	**आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव**
विशेष सहयोग	:	**मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी**
रचयित्री	:	**आर्यिका आस्थाश्री माताजी**
सहयोग	:	**आर्यिका सुनिधिमति माताजी, आर्यिका सुनीतिमति माताजी** **क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी, ब्र. केशर अम्मा**
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	**रचनाकाराधीन**
प्रतियाँ	:	**1000**
संस्करण	:	**प्रथम, वर्ष-2014**
प्रकाशक	:	**श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)** Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान		**1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ** **2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332** **3. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922** **4. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687** **5. श्री राजेश जैन (कैबल वाले), नागपुर 9422816770** **6. श्री पवन पहाड़िया, इन्दौर 8982511540**
मुद्रक	:	**राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर** फोन : 0141-2313339, मो.नं. : 9829050791 Email : shahsundeep@rocketmail.com rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	आशीर्वाद – ग.गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव	4
2.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें – आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव	5
3.	आशीर्वचन – आचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव	6
4.	जैन धर्म में व्रत का विशेष महत्त्व – आर्यिका आस्थाश्री माताजी	8
5.	श्री रविवार (आदित्यवार) व्रत कथा	12
6.	श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र – आचार्य श्री गुप्तिनन्दीजी गुरुदेव	15
7.	विधान का मांडला	16
8.	विनय पाठ	17
9.	पूजा आरंभ	18
10.	श्री नित्यमह पूजा–ग. आर्यिका राजश्री माताजी	22
11.	श्री रविव्रत विधान	26
12.	समुच्चय जयमाला	52
13.	प्रशस्ति	54
14.	अर्घावली	55
15.	आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव की पूजा	56
16.	समुच्चय महाअर्घ	61
17.	शांतिपाठ एवं विसर्जन	62
18.	विधान की आरती	63
19.	रविवारव्रत उद्यापनम् (संस्कृत)	65
20.	संघ द्वारा रचित साहित्य सूची	80

आशीर्वाद

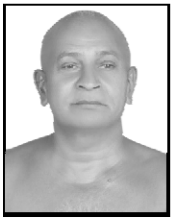

पुण्य ही जीव की सद्गति कराता है, सद्गति से **मनुष्य को** मोक्ष प्राप्त होता, सच्चा सुख उसी को कहते हैं। **संसारी** जीव को सच्चे सुख के लिये ही प्रयत्न करना **चाहिये**। **आचा**र्यों ने इसीलिये देवपूजा का विधान ग्रहस्थों के लिये अनिवार्य किया है। सद् ग्रहस्थ को प्रतिदिन जिनपूजा करना चाहिये। द्रव्यपूर्वक भावपूजा करना चाहिये। ये पूजा विधान पुण्यानुबंधी पुण्य कमाने के लिये है। माताजी ने **'श्री रविव्रत विधान'** को लिखा है। व्रत विधान करने से जीव को परम्परा से मुक्ति की प्राप्ति होती है। माताजी का परिश्रम कब सार्थक होगा जब सद् ग्रहस्थ व्रत करें, विधान करें।

इस विधान को करके अवश्य पुण्य लाभ उठावें। ऐसा मेरा कहना है, माताजी को व प्रकाशक को आशीर्वाद।

ग.ग. कुन्थुसागर

27-1-2014

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें

राग : (1) ज्योति कलश छलके.. (2) वन्द्य चरण जिनके...

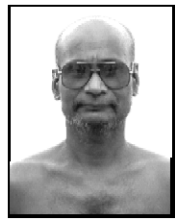

वन्द्य चरण जिनके..2
जिनके चरणे नतमस्तक है, इन्द्रलोक के ऽ ऽ ऽ
वन्द्य चरण जिनके...2 (टेक)

आत्मध्यान से सर्वज्ञ हुए, विश्व विद्या के ज्ञानी जो हुए।
अन्तर्यामी सभी के...2॥1॥ वन्द्य चरण जिनके...

सत्य अहिंसा का पाठ पढ़ाया, विश्व शान्ति का सन्देश दिया।
पवित्र भाव से...2॥2॥ वन्द्य चरण जिनके...

आत्म विकास को सर्वोच्च कहा, भौतिक विकास अनुगामी कहा।
अनेकान्तमय से...2॥3॥ वन्द्य चरण जिनके...

समता सार्वभौम है कहा, व्यवहार व भाव में कहा।
वैश्विक दृष्टि से...2॥4॥ वन्द्य चरण जिनके...

आत्मा में परमात्मा निहित कहा, शुद्धात्मा ही परमात्मा है।
यथा वृक्ष बीज से...2॥5॥ वन्द्य चरण जिनके...

उन्होंने कहा करो आत्मकल्याण, जिससे होगा विश्व कल्याण।
'कनक' भाये भाव से...2॥6॥ वन्द्य चरण जिनके...

हमारी संघ की श्रमणी आस्थाश्री जब हमारे पास थी उस समय भी भजन आदि गाती थी। अभी तो कवियित्री बनकर कविता, विधान आदि की रचना करने लगी हैं। माताजी की यह क्षमता और भी विकसित हो मेरा ऐसा शुभाशीर्वाद है।

माताजी द्वारा रचित **'श्री रविव्रत विधान'** स्व-पर-विश्वकल्याणकारी बने ऐसी मंगल कामना है।

माताजी आत्मकल्याण करते हुए विश्वकल्याण करे ऐसा शुभाशीर्वाद सहित मंगल कामनाओं के साथ...

-आचार्य कनकनंदी

हल्दीघाटी (राजसमन्द) 26-7-2013

आशीर्वचन

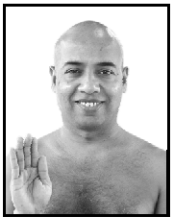

पार्श्वनाथ भगवान हैं, सर्व सुखों की खान।
उनका रविव्रत श्रेष्ठ है, देता सिद्धी निधान॥

भगवान पार्श्वनाथ का पावन जीवन चरित्र समतामूलक है। उनकी दस भव की साधना क्षमा की साधना है। साहस व धैर्य की साधना है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने दस भवों में आये संघर्ष व उपसर्ग पर एकमात्र समता से सफलता प्राप्त की। उनके वैरी कमठ ने जितनी बार उनको दबाया, पीड़ित किया उतना ही भगवान ऊपर उठते गये, सफलता का शिखर प्राप्त करते गये। उन्होंने ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया बल्कि क्रोध का सामना क्षमा से किया। उन्होंने क्रोध की अग्नि पर क्षमा का जल डाल दिया। भगवान को परेशान करने वाला स्वयं हर बार दुःख के महासागर में गिरता गया। भगवान पार्श्वनाथ का जीवन बताता है अच्छाई का फल अच्छा होता है और कमठ का जीवन बताता है बुराई का फल बुरा होता है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने पवित्र आचरण से बताया जीव का स्वभाव समता है, विषमता नहीं। उनकी समता कष्ट सहिष्णुता को सारे संसार ने सराहा तथा उन्हें अपना आदर्श माना। इसलिए आज भारत सहित सम्पूर्ण देश वा विदेश के सभी जिनालयों में सर्वाधिक भगवान पार्श्वनाथजी की प्रतिमायें विराजमान हैं। श्रावकों ने आचार्यों की प्रेरणा से उनकी प्रतिमा विराजमान की तो अनेक आचार्यों, मुनियों, भट्टारकों व कवियों ने उनके जीवन चरित्र को अनेक पुराण ग्रन्थों, कथा, नाटक, कविता–स्तोत्र व पूजा में लिपिबद्ध किया। सबने अपनी शैली में भगवान का गुणानुवाद किया। भगवान पार्श्वनाथ के नाम से अनेक व्रत भी किये जाते हैं। उनमें रविव्रत व मुकुट सप्तमी व्रत विशेष हैं। सम्पूर्ण देश में सर्वाधिक प्रचलित व्रत रविव्रत है। रविव्रत भी अहंकारी के अहंकार को तोड़ने वाला और धनहीन को धनवान, दुःखियों को सर्वसुखी बनाने वाला व्रत हैं। इसकी कथा से हम व्रत के सम्पूर्ण रहस्य को जान सकते हैं। रविव्रत पर भी संस्कृत व हिन्दी में अनेक विधान देखने को

मिलते हैं। इसी रविव्रत पर हमारी संघस्था आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने भी एक सुन्दर सारगर्भित स्वतंत्र रविव्रत विधान बनाया है। रविव्रत के 9 वर्ष के 9 वलयों के अर्घ में माताजी ने अपने ढंग से भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति की है। साथ में हम प्रभु भक्ति कितने द्रव्यों से, कितने प्रकार से कर सकते हैं। यह संदेश भी विधान के अनेक छन्दों में दिया है।

81 अर्घ व कुछ पूर्णार्घ के इस विधान में उन्होंने, दोहा, काव्य, शम्भु, सखी, नरेन्द्र, चौपाई, गीता आदि अनेक छन्दों का प्रयोग किया है। पूरा विधान सरल, सहज सुन्दर है। इससे पूर्व भी माताजी ने अनेक पूजन, भजन, चालीसा के बाद, सोलहकारण विधान, दशलक्षण विधान, पंचमेरु विधान, महावीर विधान, एकीभाव विधान, नंदीश्वर विधान की रचना की है व महासती चन्दना, सती मनोरमा आदि अनेक कथा साहित्य का भी सृजन किया है। आपकी यह लेखनी अनवरत चलती रहे एवं यही श्रुत साधना, केवलज्ञान की प्राप्ति में कारण बने, यही उनके लिए आशीर्वाद है। विधान में मुनि श्री सुयशगुप्तजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी, आर्यिका सुनिधिमति माताजी, आर्यिका सुनीतिमति माताजी ने सहज सहयोग देकर वाग्भारती की सेवा की है। वह उनके ज्ञान कोष में वृद्धि का कारण बने यही उनके लिए शुभकामना है।

इस ग्रंथ के दातार, प्रकाशक, मुद्रक, पाठक, पूजक आदि सभी को हमारा शुभाशीर्वाद।

-आचार्य गुप्तिनंदी

दिनांक 1 अक्टूबर 2014
दिल्ली वर्षायोग-2014

जैन धर्म में व्रत का विशेष महत्त्व

दोहा

चिंतामणि श्री पार्श्व को, झुक-झुक करूँ प्रणाम।
संकटहर संकट हरो, जपूँ तुम्हारा नाम॥

श्री वीतरागी, सर्वज्ञ, हितोपदेशी, वर्तमान, भूत, भविष्यकाल की त्रिकाल चौबीसी को बारम्बार नमस्कार। तीर्थंकर चक्रवर्ती कामदेव त्रय पदधारी कल्पतरु श्री शांतिनाथ भगवान को नमोऽस्तु। कलिकुण्ड, संकटहर, चिंतामणि श्री पार्श्वनाथ भगवान को बारम्बार नमस्कार।

तीन कम नव कोटि मुनिराजों को नमोऽस्तु। परम पूज्य दादा गुरु आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी गुरुदेव को नमोऽस्तु। मम दीक्षा गुरु परम पूज्य गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु। परम पूज्य शिक्षा गुरु वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु।

परम पूज्य प्रज्ञायोगी कविहृदय, महाकवि दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनन्दी जी गुरुदेव को सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्तिपूर्वक कोटि-कोटि नमोऽस्तु-नमोऽस्तु-नमोऽस्तु।

जिन भक्ति का उपदेश हमारे आचार्यों ने दिया है। इसलिये जैनधर्म में अनेक व्रत, उपवास बताये हैं। हर व्रत की महिमा अपने आप में अनूठी है। समय-समय पर श्रावक-श्राविकाएँ व्रत, उपवास, एकाशन आदि गुरु से लेकर करते आ रहे हैं। और जब तक गुरु हैं तब तक इसी तरह व्रत, उपवास करते रहेंगे।

श्रावक ही नहीं बल्कि साधु भी इन व्रतों को श्रद्धा से करते आये हैं। छोटा व्रत हो या बड़े से बड़ा व्रत हो, जिसने भी जितनी श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक जो भी व्रत किया है उसे उसका फल मिला है। व्रत करने से जीवों

को धन, वैभव, स्वर्गादिक सुख और अंत में व्रत के फलस्वरूप मोक्ष की प्राप्ति होती है। हम कोई भी व्रत की कथा जब पढ़ते हैं तो अनेक कथा के अंत में व्रत करने वाले को निर्वाण की प्राप्ति हुई है, ऐसा व्रत का फल कथा के अंत में आता है।

हर व्रत की विधि आचार्यों ने अलग-अलग बताई है। किसी में अल्प भोजन करना बताया है, किसी में एकाशन, किसी में उपवास क्योंकि तप, त्याग, नियम, संयम जो लिया जाता है वह शक्ति के अनुसार लिया जाता है। जिसमें जितनी शक्ति हो वह उतना त्याग करे। बस जो भी व्रत, उपवास करें उस दिन क्रोध नहीं करे। समता में रहे, विषमता बिल्कुल भी नहीं आने दे, क्रोध करने पर सारा व्रत उपवास निष्फल हो जाता है। कोई कितना भी आपको परेशान करे परन्तु हम अपनी समता नहीं छोड़े। जितना हो सके व्रत के दिन अधिक समय धर्मध्यान में बिताये। मंत्रजाप, पूजा, पाठ, स्वाध्याय आदि में अपने मन को लगावें। घर परिवार से निवृत्त होकर गुरुओं के पास या जिनालय में बैठकर अपना समय निकालें। घर-परिवार से दूर रहने पर राग-द्वेष नहीं होगा।

राग-द्वेष ही जीव को कर्मों का बंध कराता है। जितना-जितना हमारा राग-द्वेष-मोह कम होगा उतना ही, कर्मों का बंध कम होगा।

जब भी हमें व्रत लेना हो तो गुरु से व्रत लेना चाहिये। कभी भी व्रत लेकर छोड़ना नहीं चाहिये। व्रत खंडित हो जाये, टूट जाये तो पुनः गुरु से प्रायश्चित्त ले लेना चाहिये।

फिर से व्रत का अखंड रूप से पालन करना चाहिये। व्रत लेकर जो व्रत को छोड़ देता है वह महान् दुःखों का पात्र बनता है।

यह रविव्रत भी एक सेठानी ने लिया और परिवार के लोगों के द्वारा व्रत की निन्दा करने से उसने व्रत को छोड़ दिया। वे व्रत को तोड़ने के कारण दर-दर के भिखारी बन गये। कुछ वर्ष के बाद पुनः व्रत ग्रहण किया। व्रत के

प्रभाव से उनके दिन पुनः फिर गये। सबने श्रद्धा से रविव्रत को अपनाया, पालन किया। जिससे उनको राज सम्मान प्राप्त हुआ, अंत में मोक्ष को प्राप्त किया।

यह रविवार व्रत 9 वर्ष तक किया जाता है। उत्तम, मध्यम, जघन्य रूप से भी व्रत होता है। जैसी शक्ति हो उस प्रकार व्रत का पालन करें। हर वर्ष में आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में जो अंतिम रविवार आये उस समय यह व्रत ग्रहण करें। इस प्रकार आषाढ़ महीने का एक और श्रावण महीने में चार, भाद्रमास के 4 कुल नो रविवार किये जाते हैं। हर वर्ष में अलग-अलग भोजन सामग्री इसमें बताई है। या फिर 81 उपवास भी कर सकते हैं। पूरी विधि रविवार व्रत की कथा को पढ़कर समझे। इस विधान में पूर्णार्घ को मिलाकर कुल 90 अर्घ चढ़ते हैं। जब भी हम रविव्रत करते हैं तो उद्यापन में यह विधान हमें करना चाहिये।

आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव के आशीर्वाद से मैंने यह रविवार व्रत का छोटा सा विधान लिखा है। पूज्य गुरुदेव ने ही इसका संपादन किया है।

जिनकी लेखनी में माँ वागेश्वरी बैठी हो, जो महाकवि हो उनके लिये मैं क्या लिखूँ ? गुरुदेव बड़े ही सरल स्वभावी हैं। मधुरभाषी हैं। एक बार जो इनसे जुड़ जाता है वह हमेशा के लिये इनका परम भक्त बन जाता है। गुरुवर ने अनेक विधानों की रचना की है। अनेक विधानों का संपादन किया है। एक से बढ़कर एक विधान गुरुदेव ने लिखे हैं।

गुरुदेव में कवित्व शक्ति बचपन से ही थी। वे प्रतिभा के धनी थे। गुरुदेव जहाँ भी विधान करवाते हैं तो स्वयं पूरा विधान अपने मधुर कंठ से उच्चारण करते हैं। जब तक विधान चलता है तब तक वहाँ बैठे रहते हैं। इसलिये उनके सानिध्य में जो भी विधान अभी तक हुये हैं उन विधानों में महती धर्म प्रभावना हुई है। स्वयं गाना, मंत्र उच्चारण करना और हर एक मंत्र व छंद के विषय में सब भक्तों को समझाना। गुरुदेव के समझाने से जब तक

विधान होता है तो तब तक कोई भी भक्त बीच में उठकर नहीं जाता। वो प्रभु की भक्ति करने का उपदेश देते हैं। स्वयं भक्ति में लग जाते हैं। गुरुदेव सभी भक्तों को यही कहते हैं कि भक्ति करो, सब संकट मिट जायेंगे। ऐसा भक्ति का मार्ग दिखाने वाले, सब भक्तों को भक्ति में लगाने वाले गुरुदेव को कोटि-कोटि नमोऽस्तु-नमोऽस्तु। मुनि श्री सुयशगुप्तजी को नमोऽस्तु, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी को नमोऽस्तु।

यह विधान रोहतक में ता. 27-1-2013 पौष शुक्ला पूर्णिमा रविवार, रवि पुष्यामृत योग में प्रारम्भ किया और ज्येष्ठ शुक्ला सप्तमी को दिल्ली में आकर पूर्ण किया।

यह रविव्रत विधान सभी भक्तों के जीवन को सूर्य की तरह चमकाये। रविव्रत करने वालों को मोक्ष दिलाये। भगवान पारसनाथ के चरणों में, मैं यही भावना भाती हूँ।

यह रविव्रत विधान संस्कृत में भी है, उसी के आधार पर इस विधान में पूर्णार्घ में मंत्र लिखे हैं। संस्कृत का विधान भट्टारक महीचन्द्र के शिष्य ब्रह्मश्री जयसागरजी के द्वारा लिखा है। संस्कृत का विधान इसमें पीछे दिया है। वहाँ से उसका अवलोकन करें। संस्कृत का विधान जो भी करना चाहे वो इस पुस्तक से कर सकते हैं।

हे प्रभु ! आपने जिस प्रकार समता धरकर अपने कर्मों पर विजय प्राप्त की, उपसर्ग विजेता नाथ हमें भी ऐसा आशीर्वाद देना। हम भी आपके समान समताधारी बने, आपके गुणों की हमें प्राप्ति हो। इन्हीं भावना के साथ प्रभु के चरणों में बारम्बार नमोऽस्तु-नमोऽस्तु-नमोऽस्तु....

इस विधान के प्रकाशक, दानी धर्मात्मा परिवार को आशीर्वाद।

- आर्यिका आस्थाश्री

श्री रविवार (आदित्यवार) व्रत कथा

काशी देश की बनारस नगरी का राजा महीपाल अत्यन्त प्रजावत्सल और न्यायी राजा था। उसी नगर में मतिसागर नाम का एक सेठ और गुणसुन्दरी नाम की उसकी स्त्री थी। इस सेठ के पूर्व पुण्योदय से उत्तमोत्तम गुणवान तथा रूपवान सात पुत्र उत्पन्न हुए।

उनमें छः का तो विवाह हो गया था। केवल लघुपुत्र गुणधर कुंवारे थे सो गुणधर किसी दिन वन में क्रीड़ा करते विचर रहे थे तो उन्हें गुणसागर मुनि के दर्शन हो गये। वहाँ मुनिराज का आगमन सुनकर और भी बहुत लोग वन्दनार्थ वन में आये थे और सब स्तुति वन्दना करके यथा स्थान बैठे। श्री मुनिराज उनको धर्मवृद्धि कहकर अहिंसादि धर्म का उपदेश देने लगे।

जब उपदेश हो चुका तब साहूकार की स्त्री गुणसुन्दरी बोली– स्वामी ! मुझे कोई व्रत दीजिये। तब मुनिराज ने उसे पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत का उपदेश दिया और सम्यक्त्व का स्वरूप समझाया और पीछे कहा– बेटी ! तू आदित्यवार व्रत कर, सुन। इस व्रत की विधि इस प्रकार है कि आषाढ़ मास में शुक्ल पक्ष में अंतिम रविवार से लेकर नव रविवारों तक यह व्रत करना चाहिये।[1]

प्रत्येक रविवार के दिन उपवास करना या बिना नमक (मीठा) के अलोना भोजन एकबार (एकासना) करना पार्श्वनाथ भगवान की पूजा अभिषेक करना। घर के साथ आरम्भ का त्यागकर विषय और कषाय भावों को दूर करना, ब्रह्मचर्य से रहना, रात्रि जागरण भजनादि करना और 'ॐ ह्रीं अर्हं पार्श्वनाथाय नमः' इस मंत्र की 108 बार जाप करना।

इस प्रकार नव वर्ष तक यह व्रत करके पश्चात् अंतिम रविवार को उद्यापन करना चाहिए। दूसरी विधि के अनुसार प्रथम वर्ष नव उपवास करना, दूसरे वर्ष काँजी (चावल का मांड) आहार ग्रहण करना, तीसरे वर्ष नमक बिना आहार लेना, चौथे वर्ष बिना नमक का अल्प आहार करना, पाँचवें वर्ष छाछ (तक्र) लेना चाहिये, छट्ठे वर्ष बिना नमक का एक अन्न ही ग्रहण करना, सातवें वर्ष में गोरस (दूध, दही, घृत आदि) के बिना भोजन करना तथा आठवें वर्ष में नीरस भोजन

1. कहीं–कहीं कथाओं में आषाढ़ शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से भी रविव्रत करने का उल्लेख मिलता है।

करना और नवें वर्ष एक बार का परोसा हुआ एक स्थान पे बैठकर भोजन करना, फिर दूसरी बार नहीं लेना और थाली में जूठन भी नहीं छोड़ना।

नवधाभक्ति कर मुनिराज को भोजन कराना और नव वर्ष पूर्ण होने पर उद्यापन करना। सो नव–नव उपकरण मंदिरों में चढ़ाना, नव शास्त्र लिखवाना, नव श्रावकों को भोजन कराना, नव–नव फल श्रावकों को बाँटना, समवशरण का पाठ पढ़ना, पूजन विधान करना आदि।

इस प्रकार गुणसुंदरी व्रत लेकर घर आई और सब कथा घर के लोगों को कह सुनाई तो घरवालों ने सुनकर इस व्रत की बहुत निंदा की। व्रत की निंदा सुन सेठानी ने व्रत को छोड़ दिया। इसलिये उसी दिन से उस घर में दरिद्रता का वास हो गया। सब लोग भूखों मरने लगे, तब सेठ के सातों पुत्र सलाह करके परदेश को निकले। सो साकेत (अयोध्या) नगरी में जिनदत्त सेठ के घर जाकर नौकरी करने लगे और सेठ सेठानी बनारस ही में रहे।

कुछ काल के पश्चात् बनारस में कोई अवधिज्ञानी मुनि पधारे, सो दरिद्रता से पीड़ित सेठ–सेठानी भी वन्दना को गये और दीन भाव से पूछने लगे– हे नाथ ! क्या कारण है कि हम लोग ऐसे रंक हो गये ? तब मुनिराज ने कहा– तुमने मुनिप्रदत्त रविवार व्रत की निंदा की है इससे यह दशा हुई है।

यदि तुम पुनः श्रद्धा सहित इस व्रत को करो तो तुम्हारी खोई हुई सम्पत्ति तुम्हें फिर मिलेगी। सेठ–सेठानी ने मुनि को नमस्कार करके पुनः रविवार व्रत किया और श्रद्धा सहित पालन किया जिससे उनको फिर से धन–धान्यादि की अच्छी प्राप्ति होने लगी।

परन्तु इनके सातों पुत्र साकेतपुरी में कठिन मजदूरी करके पेट पालते थे। तब एक दिन लघु भ्राता गुणधर वन में घास काटने को गया था। सो शीघ्रता से गट्ठा बाँधकर घर चला आया और हंसिया (दाँतडु) वही भूल आया। घर आकर उसने भावज से भोजन माँगा। तब वह बोली–

लालाजी ! तुम हंसिया भूल आये हो, सो जल्दी जाकर ले आओ, पीछे भोजन करना, अन्यथा हंसिया कोई ले जायेगा तो सब काम अटक जायेगा। बिना द्रव्य नया दांतड़ा कैसे आयेगा ? यह सुनकर गुणधर तुरन्त ही पुनः वन में गया सो देखा कि हंसिया पर बड़ा भारी सांप लिपट रहा है।

यह देखकर गुणधर बहुत दुःखी हुये कि दांतड़ा बिना लिये तो भोजन नहीं

मिलेगा और दांतड़ा मिलना कठिन हो गया है तब वे विनीत भाव से सर्वज्ञ वीतराग पार्श्वनाथ प्रभु की स्तुति करने लगे सो उनके एकाग्रचित्त से स्तुति करने के कारण धरणेन्द्र का आसन हिला, उनसे समझा कि अमुक स्थानों में पार्श्वनाथ जिनेन्द्र के भक्त को कष्ट हो रहा है।

तब करुणा करके पद्मावती देवी को आज्ञा की कि तुम जाकर प्रभुभक्त गुणधर का दुःख निवारण करो। यह सुनकर पद्मावती देवी तुरन्त वहाँ पहुँची और गुणधर से बोली–

हे पुत्र ! तुम भय मत करो। यह सोने का दांतड़ा और रत्न का हार तथा रत्नमय भगवान पार्श्वनाथ प्रभु का बिम्ब भी ले जाओ, सो भक्तिभाव से पूजा करना इससे तुम्हारा दुःख–शोक दूर होगा।

गुणधर, देवी द्वारा प्रदत्त द्रव्य और जिनबिम्ब लेकर घर आये सो प्रथम तो उनके भाई यह देखकर डरे कि कहीं यह चुराकर तो नहीं लाया है, क्योंकि ऐसा कौनसा पाप है जो भूखा नहीं करता है, परन्तु पीछे गुणधर के मुख से सब वृत्तांत सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और भूरि–भूरि प्रशंसा करने लगे।

इस प्रकार दिनोंदिन उनका कष्ट दूर होने लगा और थोड़े ही दिनों में वे बहुत धनी हो गये। पश्चात् उन्होंने एक बड़ा मंदिर बनवाया, प्रतिष्ठा कराई, चतुर्विध संघ को चारों प्रकार का यथायोग्य दान दिया और बड़ी प्रभावना की।

जब यह सब वार्ता राजा ने सुनी। तब उन्होंने गुणधर को बुलाकर सब वृतांत पूछा– और अत्यन्त प्रसन्न हो अपनी परम सुन्दरी कन्या गुणधर को ब्याह दी तथा बहुत सा दान–दहेज दिया। इस प्रकार बहुत वर्षों तक वे सातों भाई राज्यमान्य होकर सानन्द वहीं रहे, पश्चात् माता–पिता का स्मरण करके अपने घर आये और माता–पिता से मिले। पश्चात् बहुत काल तक मनुष्योचित सुख भोगकर सन्यासपूर्वक मरण कर यथायोग्य स्वर्गादि गति को प्राप्त हुए और गुणधर उससे तीसरे भव में मोक्ष गये।

इस प्रकार व्रत के प्रभाव से मतिसागर सेठ का दारिद्रय दूर हुआ और उत्तमोत्तम सुख भोगकर उत्तम–उत्तम गतियों को प्राप्त हुए। जो और भव्यजीव श्रद्धा सहित बारह वर्ष व्रतपूर्वक इस व्रत का पालन करेंगे, वे उत्तम गति पायेंगे।

यह विधि रविव्रत फल लियो, मतिसागर गुणवान।
दुःख दरिद्र नशो सकल, अन्त लहो निरवान।।

***

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

रचनाकार : आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव

(तर्ज : जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र.....)

अभीष्ट सिद्धीदायकम्, अभीष्ट फल प्रदायकम्।
अलोक लोक ज्ञायकम्, हे पार्श्व ! विश्व नायकम्॥
प्रभात सुप्रभात हो, जहाँ जिनेन्द्र साथ हो।
जिनेन्द्र पार्श्वनाथ को, प्रणाम हो प्रणाम हो॥1॥
अनंत ज्ञानवान हो, अनंत दानवान हो।
अनंत गुणनिधान हो, अनंत सौख्यवान हो॥
विनम्र उत्तमांग हो, अनाथ के सनाथ को।
जिनेन्द्र पार्श्वनाथ को, प्रणाम हो प्रणाम हो॥2॥
सुरेन्द्र पूज्य आप हो, नरेन्द्र पूज्य आप हो।
शतेन्द्र पूज्य आप हो, फणीन्द्र पूज्य आप हो॥
जहाँ जिनेन्द्र जाप हो, वहाँ कभी न पाप हो।
जिनेन्द्र पार्श्वनाथ को, प्रणाम हो प्रणाम हो॥3॥
जयंत में जयंत हो, महंत में महंत हो।
अनंत में अनंत हो, हे पार्श्व मुक्तिकंत हो॥
समस्त कष्ट शांत हो, समस्त विघ्न शांत हो।
जिनेन्द्र पार्श्वनाथ को, प्रणाम हो प्रणाम हो॥4॥
अहिपति तुम्हें नमें, महिपति तुम्हें नमें।
ऋषि यति तुम्हें नमें, मुनिपति तुम्हें नमें॥
सुपुत्र अश्वसेन को, सुदीप उग्रवंश को।
जिनेन्द्र पार्श्वनाथ को, प्रणाम हो प्रणाम हो॥5॥
अहिपति की वल्लभा, सुमाथ पे धरे सदा।
इसीलिये उसे भजे, समस्त विश्व सर्वदा॥
मुनीन्द्र 'गुप्तिनंदी' को, सुसिद्ध वेष दान दो।
जिनेन्द्र पार्श्वनाथ को, प्रणाम हो प्रणाम हो॥6॥

श्री रविव्रत विधान का माण्डला

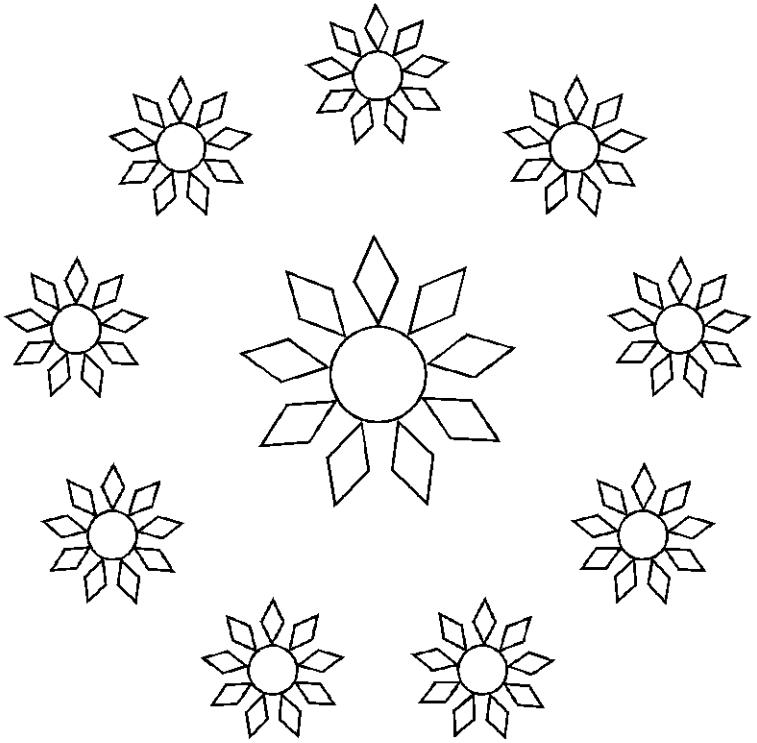

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

3
2 卐 24
5

विनय पाठ

(दोहा)

कर्मजाल में हूँ फँसा, पाया है बहु त्रास।
जग स्वारथ से है भरा, किस पर हो विश्वास॥1॥
भक्ति–श्रद्धा–विनय सहित, आया जिनवर पास।
धन्य हुआ है भाग्य मम, मिट गई मन की प्यास॥2॥
प्रभुवर ने तो कर दिए, कर्म ये आठों नाश।
केवलज्ञान उदित हुआ, जग को दिया प्रकाश॥3॥
नमन करूँ जिनदेव को, करके निर्मल भाव।
खेवटिया जिन नाथ मम, पार लगा दो नाव॥4॥
भव्यजनों को तारते, भवसागर से आप।
शरण आपकी पा प्रभु, नश जाते सब पाप॥5॥
गुण अनंत हैं आपके, कर न सकें विस्तार।
अजर–अमर जिननाथ तुम, हो त्रिभुवन आधार॥6॥
अरिहंत–सिद्धाचार्य का, ले मंगल शुभ नाम।
उपाध्याय साधू–चरण, सफल करें सब काम॥7॥
जिनवाणी माता मुझे, देना सम्यक् ज्ञान।
कृपा करो जिस पर वही, बन जाता भगवान्॥8॥

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र माहात्म्य

(नरेन्द्र छन्द)

पवित्र हो या अपवित्र, प्राणी चाहे भी हो कैसा।
बुरी अवस्था हो या अच्छी, या ना हो उसपे पैसा।।
णमोकार का ध्यान करे जो, वह पावन बन जाता है।
परमातम का सुमरण ही, जीवन को शुद्ध बनाता है।।
महाभयानक विघ्नों से, यह महामंत्र छुड़वाता है।
जग जीवों को शांतिकारक, मुक्ति जो दिलवाता है।।1।।
सब पापों का क्षयकारक जो, सबमें पहला मंगल है।
विश्वशांति का महाविधायक, हरे अनिष्ट अमंगल है।।
अर्हं का उच्चारण करके, परम ब्रह्म को नमता हूँ।
सिद्धचक्र के बीजाक्षर को, नमस्कार नित करता हूँ।।2।।

कर्म अष्ट से मुक्त हुए जो, मुक्ति निकेतन के वासी।
सम्यक्त्वादि गुणों से भूषित, नमस्कार हो अविनाशी॥
जिनवर की पूजन करने से, प्रलय-विघ्न नश जाते हैं।
भूत शाकिनी सर्प शांत हो, विष-निर्विष हो जाते हैं॥3॥

(पुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति वाचन

(नरेन्द्र छन्द)

अनंत चतुष्टय के तुम धारक, स्याद्वाद के हो दायक।
अंतर भौतिक लक्ष्मी शोभित, वंदनीय त्रिभुवन नायक॥
मूलसंघ के भव्य प्रवर को, पुण्य दिलाते हो बिन हेत।
करें जिनेश्वर की विधि पूजा, धन्य भाग्य मम भक्ति समेत॥1॥

तीन लोक में श्रेष्ठ व सुंदर, प्रभु की महिमा उदित हुई।
स्वतः प्रकाशमयी दृग्ज्योति, भव्यों के हित मुदित हुई॥

निर्मल ज्ञानामृत है प्रगटा, मंगल स्व-पर प्रकाशक हार।
तीन लोक में फैल गया वह, त्रिजग वस्तु का जाननहार॥2॥

द्रव्यशुद्धि औ भावशुद्धि, दोनों विधि का आलम्बन ले।
करूँ यथार्थ पुरुष की पूजा, भाव सहित मैं द्रव्य लिए॥
सर्व वस्तु का ज्ञान कराते, अर्हत पुरुषोत्तम पावन।
उनकी केवलज्ञान अग्नि में, करें विसर्जित पुण्यार्जन॥3॥

(ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चौबीस तीर्थंकर स्तुति

(यहाँ प्रत्येक भगवान के नाम के साथ पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें।)

(नरेन्द्र छन्द)

मंगल वृषभदेव जिनवर हैं, अजितदेव भी हैं मंगल।
मंगल संभव श्री जिनस्वामी, अभिनंदन करते मंगल॥
मंगल कर्ता सुमतिप्रभु हैं, पद्मप्रभु मंगलदायक।
श्री सुपार्श्व करते हैं मंगल, चंद्रप्रभु हैं सुखकारक॥1॥

पुष्पदंत अमंगल हर्ता, शीतल शीतलता दाता।
श्री श्रेयांस सुमंगल भूषण, वासुपूज्य सब सुख दाता॥
विमल कष्ट हर मंगल करते, अनंतजिन सब सुख कर्ता।
धर्मप्रभु मंगल स्वरूप बन, शांतिप्रभु शांति कर्ता॥2॥

कुंथुनाथ मंगलधर स्वामी, अरहनाथ अरि के हर्ता।
श्री मल्लि मंगल जिन स्वामी, मुनिसुव्रत मुनि के भर्ता॥
नमिजिनेश मंगल की मूरत, नेमिनाथ प्रभु हितकारी।
पार्श्वप्रभो उपसर्ग विजेता, वर्द्धमान मंगलकारी॥3॥

(पुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : **ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः।** (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा॥4॥

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन॥
अहिक्षेत्र अणिंदा वृषभदेव जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर॥5॥

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल के चन्दा को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा आदिक तीर्थों को भी वंदन॥
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी॥6॥

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन॥7॥

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें॥
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री रविव्रत विधान

शंभु छंद

उपसर्ग विजेता पार्श्व प्रभु, मेरे मन मंदिर में आओ।
संकटहर चिंतामणि बाबा, सब चिंता दूर भगा जाओ।।
दस भव का वैरी दुष्ट कमठ, वो भी तुम शरणा में आये।
हम भी आह्वानन करते हैं, पूजा से उत्तम सुख पायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुःखदारिद्र्य निवारक, कामनापूर्ण फलदायक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अर्हं कलिकुंड संकटहर सर्व उपद्रव निवारक शांति तुष्टि-पुष्टि प्रदायक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणकारक मंगलदायक धरणेन्द्र पद्मावती पूजित सहस्त्रफणी श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शेर छंद

जिनदेव का भक्ति से भक्त न्हवन करायें।
निज जन्म जरा मृत्यु रोग नाशने आयें।।
हम पार्श्वनाथ की विशेष भक्ति रचायें।
रविव्रत विधान करके सर्व पाप नशायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कलिकुण्ड पार्श्वनाथ को हम गंध लगायें।
प्रभु के चरण की गंध को हम शीश लगायें।। हम पार्श्वनाथ...।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नीलम मणि समान छवि आपकी प्यारी।
अक्षत अखण्ड ले चढ़ायें भक्त पुजारी।। हम पार्श्वनाथ...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के सिंहासन के मध्य नाथ शोभते।
हम उनको पुष्प रत्न चढ़ा पाप छोड़ते॥
हम पार्श्वनाथ की विशेष भक्ति रचायें।
रविव्रत विधान करके सर्व पाप नशायें॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना प्रकार की बनाई शुद्ध मिठाई।
अपनी क्षुधा मिटाने हमने चरण चढ़ाई॥ हम पार्श्वनाथ...॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर ये जगमगा रहा अखण्ड ज्योति से।
हम दीप दान करके सजें ज्ञान ज्योति से॥ हम पार्श्वनाथ...॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ध्यान अग्नि में जलाये कर्म आपने।
हम भी चढ़ायें धूप अपने कर्म नाशने॥ हम पार्श्वनाथ...॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर मंदिरों में पार्श्वनाथ आप विराजे।
हम श्रेष्ठ मधुर फल चढ़ायें आपको ताजे॥ हम पार्श्वनाथ...॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हर भव में आपने क्षमा का सूत्र सिखाया।
हमने अनर्घपद के हेतु अर्घ चढ़ाया॥ हम पार्श्वनाथ...॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

पार्श्वनाथ की प्रतिमा मन पावन करे।
संकटहर चिंतामणि सब संकट हरे॥
प्रभु पद में हम त्रय धारा जल की करें।
कर कमलों से पुष्पाञ्जलि अर्पण करें॥

शांतये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : (1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमः।
(2) ॐ ह्रीं नमो भगवते चिंतामणि पार्श्वनाथ सप्तफण मंडिताय श्री धरणेन्द्र-पद्मावती सहिताय मम ऋद्धिं सिद्धिं वृद्धिं सौख्यं कुरु-कुरु स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : पार्श्वनाथ भगवान की, जयमाला सुखकार।
रविव्रत नायक पार्श्व को, वंदन बारम्बार॥

(नरेन्द्र छंद)

जय-जय पार्श्व जिनेश्वर सबके, चिंतामणि संकटहारी।
यंत्रराज कलिकुण्ड नाथ की, मूरत लगती मनहारी॥
बालयतिश्वर तैइसवें जिन, वामा माँ नंदन प्यारे।
अश्वसेन के राजकुँवर को, पूजे सुर-नर मिल सारे॥1॥

आप नाम के पर्व अनेकों, भक्त भक्ति से अपनाये।
उनमें भी रविव्रत करने से, सब दुःख संकट कट जाये॥
मतिसागर की सेठानी ने, मुनिवर से रविव्रत धारा।
घर जाकर बेटे बहुओं को, बतलाया व्रत दुःखहारा॥2॥

करें पुत्र परिजन जब निंदा, सेठानी ने व्रत तोड़ा।
पाप उदय से उसी समय में, लक्ष्मी ने उनको छोड़ा॥

दर-दर के वो बने भिखारी, दासवृत्ति को अपनायें।
पुत्र बनारस नगर छोड़कर, नगर अयोध्या में जायें॥3॥
सेठ-सेठानी रुके बनारस, उनके फिर शुभ दिन आये।
वो अवधिज्ञानी गुरुवर को, अपनी पीड़ा बतलाये॥
मुनि बोले रविव्रत निंदा से, तुम पर ये संकट आया।
उनने निज आलोचन करके, फिर से रविव्रत अपनाया॥4॥
रविव्रत की महिमा से उनके, तत्क्षण अच्छे दिन आये।
किन्तु सातों पुत्र अवध में, व्रत निन्दा का फल पायें॥
अवध देश के एक ग्राम में, सातों खेती करते थे।
सर्दी-गर्मी भूख प्यास वा, सब कष्टों को सहते थे॥5॥
इक दिन छोटे भाई गुणधर, हसिया भूले खेती में।
भाभी बोली जाओ पहले, हसिया लाओ खेती से॥
हसिये पर अहि[1] लिपटा देखा, गुणधर तब अति घबराया।
श्रद्धापूर्वक उसने मन में, पार्श्वनाथ प्रभु को ध्याया॥6॥
पद्मावती माता ने उसको, स्वर्णिम हसिया भेंट किया।
रत्नमयी जिनबिम्ब पार्श्व भी, बहु द्रव्यों संग भेंट दिया॥
गुणधर के श्रद्धा की महिमा, अवध नरेश्वर तक आयी।
उनने राज्य सहित कन्या दे, व्रत की महिमा फैलायी॥7॥
मात-पिता संग राज्य संपदा, वैभव उन सबने पाया।
फिर विरक्त हो मुनि दीक्षा धर, स्वर्ग संपदा सुख पाया॥
गुणधर तीजे भव में निश्चय, श्रेष्ठ सिद्ध पद पाते हैं।
रविव्रत की 'आस्था' वा महिमा, उत्तम शास्त्र बताते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रविव्रत पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- छवि आपकी मोहनी, मन मंदिर बस जाय।
संकट हर प्रभु पार्श्व जी, संकट हर कहलाय॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

1. सांप।

प्रथम वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

क्षायिक ज्ञानी हे जिनवर ! तुमको नमन।
करते हम पारस प्रभु का पूजन भजन।।
प्रथम वर्ष में हम प्रौषध उपवास कर।
नव लब्धि पायेंगे हम आह्लादकर।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजी लब्धि क्षायिक दर्शन जानिये।
दर्शन करके मोह तिमिर को हानिये।। प्रथम वर्ष...।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक सम्यक् लब्धि भूषित आप हैं।
तव चरणों में धुल जायें सब पाप ये।। प्रथम वर्ष...।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का चारित्र सदा अक्षय रहे।
क्षय नहीं होता वो क्षायिक चारित कहे।। प्रथम वर्ष...।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक दानी प्रभु के दर जो आ गया।
प्रभु के दर से कोई खाली ना गया।। प्रथम वर्ष...।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष प्रभु कामधेनु चिंतामणि।
अक्षय लाभ दिला दो हे पारसमणि।।
प्रथम वर्ष में हम प्रौषध उपवास कर।
नव लब्धि पायेंगे हम आह्लादकर।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक भोग लब्धि होती जिनराज की।
हमने भक्ति रचाई उन जिनराज की।। प्रथम वर्ष...।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक लब्धि ये उपभोग महान है।
इस लब्धि से युत जिन तुम्हें प्रणाम है।। प्रथम वर्ष...।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक वीर्य लब्धि होती भगवान में।
वो बल पायें हम भी श्री भगवान से।। प्रथम वर्ष...।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

प्रथम वर्ष के नौ रविव्रत में, अनशन व्रत स्वीकार करें।
करते जो उपवास भक्ति से, निज आतम में वास करें।।
जल फल आदिक आठ द्रव्य संग, पूरण अर्घ चढ़ाते हैं।
पार्श्वनाथ करुणा निधान को, हम सब शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं प्रथमवर्षे रविव्रतोपवासप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान है।
संकट हरे पीड़ा हरे, श्री पार्श्व करूणावान हैं॥
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे॥

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी॥
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

द्वितीय वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

द्वितीय वर्ष आषाढ़ का, शुक्ल पक्ष मनहार।
काँजी का आहार लो, उत्तम सुख दातार॥
पार्श्वनाथ भगवान का, ये रविव्रत सुखकार।
अष्ट द्रव्य ले पूजते, आ हम प्रभु के द्वार॥1॥

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ष दूसरे में करो, काँजी का आहार।
स्वर्गों का वैभव मिले, व्रत पालो सुखकार॥ पार्श्वनाथ...॥2॥

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविव्रत तीजा पार्श्व का, व्रत की सिद्धी कराय।
मांड ग्रहण कर व्रत करें, उत्तम वैभव पाय॥
पार्श्वनाथ भगवान का, ये रविव्रत सुखकार।
अष्ट द्रव्य ले पूजते, आ हम प्रभु के द्वार॥3॥

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथे रविव्रत से मिले, प्राणी को संतोष।
काँजी का आहार ले, व्रत पालें निर्दोष॥ पार्श्वनाथ...॥4॥

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकटमोचन व्रत यही, दे सुख शांति अपार।
ले आचाम्ल विशेष जो, पाये सौख्य अपार॥ पार्श्वनाथ...॥5॥

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्नहरण मंगलकरण, भुक्ति मुक्ति दातार।
कांजी ही बस ग्रहण करो, ये छठवा रविवार॥ पार्श्वनाथ...॥6॥

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना इन्द्रिय जय करो, लो काँजी आहार।
पार्श्वनाथ का ध्यान कर, पाओ पुण्य अपार॥ पार्श्वनाथ...॥7॥

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति करें हम पार्श्व की, पाने सम्यक् दर्श।
व्रत में काँजी भोज ले, नाशे मिथ्या दर्श॥ पार्श्वनाथ...॥8॥

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधिवत जो व्रत पालते, अन्नादिक दे त्याग।
काँजी दूजे वर्ष ले, छोड़ें सबसे राग।।
पार्श्वनाथ भगवान का, ये रविव्रत सुखकार।
अष्ट द्रव्य ले पूजते, आ हम प्रभु के द्वार।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

द्वितीय वर्ष में इस रविव्रत में, काँजी का आहार करें।
रसना इन्द्रिय को वश करके, षट्रस व्यंजन त्याग करें।।
पार्श्वनाथ के इस रविव्रत को, जो श्रद्धा से अपनाये।
दुःख दारिद्र्य मिटा वो अपना, जिन सम शिव लक्ष्मी पाये।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे कांजिकाहार प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान है।
संकट हरे पीड़ा हरे, श्री पार्श्व करुणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

तृतीय वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शंभु छंद)

ये वर्ष तीसरा रविव्रत का, हम नमक त्याग भोजन करते।
जो त्याग सहित व्रत को धारे, वो सर्वोत्तम यश सुख वरते॥
रविव्रत पारस प्रभु की पूजा, दुःख-संकट हरने वाली है।
आनंद सौख्य यशकीर्ति वा, धन-शांति देने वाली है॥1॥

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक सहित पूजा करते, और जाप करें जो इस व्रत का।
आहार करें जो नमक बिना, फल पाते दुगुना इस व्रत का॥ रविव्रत...॥2॥

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्वनाथ का पाठ करे, रात्रि में ना विश्राम करे।
सेंधव तज जो आहार करे, वो स्वर्ग मोक्ष अविराम वरे॥ रविव्रत...॥3॥

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में शुभ भाव जगाने को, अपने कर्तव्यों को पालें।
भवि लवण बिना भोजन करके, जीवन के विघ्नों को टाले॥ रविव्रत...॥4॥

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो व्रत लेकर अर्चा करते, उनको व्रत का फल शीघ्र मिले।
भोजन में लवणादिक छोड़े, प्रभुवर की उसको शरण मिले॥ रविव्रत...॥5॥

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नर नारी रविव्रत पाले, और राग-रंग का त्याग करे।
वो पंचेन्द्रिय पर जय पाने, जिन चरणों से अनुराग करे॥
रविव्रत पारस प्रभु की पूजा, दुःख-संकट हरने वाली है।
आनंद सौख्य यशकीर्ति वा, धन-शांति देने वाली है॥6॥

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत पालन से सिद्धी होती, जैनागम से हमने जाना।
मन वच काया त्रय शुद्धि से, हमको इस व्रत को अपनाना॥ रविव्रत...॥7॥

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब धर्म ध्यान में चित्त लगे, सांसारिक वैभव ना भाये।
प्रभु की मुख मुद्रा हृदय बसे, हम यही भावना नित भाये॥ रविव्रत...॥8॥

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौभाग्यवान वे प्राणी हैं, जो प्रभु का कीर्त्तन करते हैं।
रविव्रत के दिन संयम धरकर, प्रभु चरणों में रत रहते हैं॥ रविव्रत...॥9॥

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

वर्ष तीसरा इस रविव्रत का, नो रविवार नमक छोड़ें।
इस व्रत को श्रद्धा से करके, कर्मों के बंधन तोड़े॥
पार्श्वनाथ के शुभ चिंतन में, अपना समय लगाते हैं।
अष्ट द्रव्य में श्रीफल ले हम, ध्वज युत अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे लवणरहितैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं॥
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे॥

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी॥
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चतुर्थ वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

बाल यतिश्वर तेइसवें जिन, नगर बनारस के राजा।
पूज रहे हम तुमको निशदिन, हे मधुवन के जिनराजा॥
चौथा वर्ष लगे रविव्रत का, मन में अति उत्साह भरो।
करो अल्प आहार विधि से, रविव्रत कर शिव सौख्य वरो॥1॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्वसेन वामानंदन की, नीलमणी सम थी काया।
सौ वर्षों की आयु पाई, उत्तम तन उनने पाया॥ चौथा वर्ष...॥2॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक दिवस मित्रों को संग ले, पारस प्रभु वन में जायें।
जीव जल रहे इस लक्कड़ में, तापस को प्रभु समझायें॥
चौथा वर्ष लगे रविव्रत का, मन में अति उत्साह भरो।
करो अल्प आहार विधि से, रविव्रत कर शिव सौख्य वरों॥3॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नागयुगल को मंत्र सुनाया, मरकर वो सुरतन पायें।
शासन यक्ष बने ये दोनों, प्रभु सेवा कर हर्षाये॥ चौथा वर्ष...॥4॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व भवों के विशद ज्ञान से, हुये जिनेश्वर वैरागी।
चौथे बाल यतिश्वर के हम, चरण कमल के अनुरागी॥ चौथा वर्ष...॥5॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा लेकर करी साधना, भीमावन में प्रभु आये।
कमठ करे उपसर्ग प्रभो पे, कष्टों पे प्रभु जय पाये॥ चौथा वर्ष...॥6॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मावती माता ने आकर, प्रभु को सिर पर धार लिया।
श्री धरणेन्द्र यक्ष ने आकर, प्रभु के सर फण तान दिया॥ चौथा वर्ष...॥7॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सावलियाँ प्रभु पार्श्वनाथ की, सहस फणों की प्रतिमायें।
फणा शीश पे चिह्न सर्प युत, सर्वाधिक प्रभु प्रतिमायें॥ चौथा वर्ष...॥8॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म बनारस मोक्ष शिखर जी, तीर्थ नाथ के कहलाये।
अतिशयकारी तीर्थ अनेकों, पार्श्वनाथ के कहलाये।।
चौथा वर्ष लगे रविव्रत का, मन में अति उत्साह भरो।
करो अल्प आहार विधि से, रविव्रत कर शिव सौख्य वरों।।9।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

पारस पारस हे प्रभु पारस, तीन लोक तुमको ध्यायें।
पारस प्रभुवर के चरणों में, हम पूर्णार्घ सजा लाये।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ के, नाम मंत्र का जाप करें।
चिंतामणि संकटहर प्रभु का, पूजन ध्यान विधान करें।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे चाटुकैकभुक्ति प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान है।
संकट हरे पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पंचम – रविवार व्रत के नौ अर्घ

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(सखी छंद)

रविव्रत आषाढ़ से आता, मंदिर में उत्सव छाता।
जिसका पुण्योदय आता, वो रविव्रत में लग जाता।।
जब वर्ष पाँचवा आये, रविव्रत को भवि अपनाये।
हम पार्श्वनाथ को ध्यायें, द्रव्यों की थाल चढ़ाये।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छः रस का त्याग करीजै, रविव्रत को चित्त धर लीजे।
जल छाछ ही इसमें लीजे, इस व्रत को पूरण कीजे।। जब...।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारसमणि तो इक पत्थर, पारस प्रभु हैं तीर्थंकर।
पारसमणि स्वर्ण बनाये, प्रभु हमको प्रभु बनायें।। जब...।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैरी पे द्वेष नहीं है, भक्तों से राग नहीं है।
प्रभुवर हैं समताधारी, छवि वीतराग मनहारी।। जब...।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता प्रभुवर से सीखे, शत्रु पे कभी ना चीखे।
मैत्री प्रमोद अपनायें, गुणियों से राग बढ़ायें।। जब...।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसक जीवों को तारा, दुर्गति से उन्हें उबारा।
उनको नवकार सुनाया, सुरपद पे उन्हें बिठाया॥
जब वर्ष पाँचवा आये, रविव्रत को भवि अपनाये।
हम पार्श्वनाथ को ध्यायें, द्रव्यों की थाल चढ़ायें॥6॥

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस का रस है चोखा, इसमें किञ्चित ना धोखा।
पारस का रस हम पायें, जीवन को सफल बनायें॥ जब...॥7॥

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रमुदित मन से व्रत धारें, कहते हमको गुरु सारे।
क्रोधादिक् रञ्च न लावे, समता परिणाम जगावे॥ जब...॥8॥

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधिवत हम रविव्रत पाले, प्रभु चरणन चित्त लगालें।
इस वर्ष छाछ ही लेवे, षट्रस व्यंजन तज देवे॥ जब...॥9॥

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

वर्ष पाँचवाँ इस रविव्रत का, नो रविवार इसे पाले।
नमक बिना बस छाछ भात लें, होवें उत्तम पद वाले॥
पार्श्वनाथ की पूजा करने, जल चंदन आदिक लाये।
हर्ष सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, मन अति पावन हो जाये॥

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे निवेडभुक्ति प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं॥
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे॥

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी॥
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

षष्ठम् वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आँचली बद्ध (आठ दरब मय अर्घ बनाय... पंचमेरु पूजा की राग)

ऋद्धि सिद्धि दाता भगवान, चिंतामणि है इनका नाम।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....
छट्ठे वर्ष करें रविवार, एक अन्न इसमें आहार।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....॥1॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न विनाशक मंगलदाय, पार्श्व प्रभु सब विघ्न नशाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥2॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसको भूत पिशाच सताय, उसकी बाधा प्रभु विनशाय।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....
छट्ठे वर्ष करें रविवार, एक अन्न इसमें आहार।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....॥3॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग व्याधियाँ धर्म छुड़ाय, प्रभु का नाम निरोग बनाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥4॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिना धरम के धन ना आय, प्रभु पूजा ही भाग्य जगाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥5॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज्ञाकारी हो सुत नार, जहाँ धरम के हो संस्कार।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥6॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम पात्र महामुनिराय, उनको नित आहार कराय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥7॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान धर्म में द्रव्य लगाय, दुःख दारिद्र्य सभी मिट जाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....॥8॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत संयम तप जो अपनाय, वो भी इक दिन शिवपुर पाय।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....
छट्ठे वर्ष करें रविवार, एक अन्न इसमें आहार।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....॥9॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

षष्ठ वर्ष के इस रविव्रत में, एक अन्न ही ग्रहण करें।
त्याग नियम संयम समता धर, अपना आत्मोत्थान करें॥
नीरादिक द्रव्यों को ले हम, पूरण अर्घ चढ़ाते हैं।
रविव्रत के स्वामी पारस को, झुक-झुक शीश नवाते हैं॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे एकान्नभुक्ति प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं॥
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे॥

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी॥
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सप्तम वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नवगीता छंद)

रविव्रत लगे जब सातवाँ, गोरस तजे शुचि व्रत करें।
रस गृद्धता को त्याग कर, इक बार भोजन हम करें॥
पायें शरण प्रभु आपकी, ऐसा हमें वरदान दो।
हम कर रहे नित अर्चना, हमको प्रभो सद्ज्ञान दो॥1॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धारें निशंकित अंग को, शंका कभी भी ना करें।
जिन आप्त गुरु जिन ग्रंथ पे, श्रद्धान सच्चा हम करें॥ पायें....॥2॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कांक्षा रहित पूजा करें, भगवान पारसनाथ की।
ये अंग निकांक्षित कहें, माला जपो प्रभु नाम की॥ पायें....॥3॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में घृणा ना अल्प हो, धर्मात्मा को देखकर।
गुण के पुजारी हम बनें, जिन चरण मस्तक टेककर॥ पायें....॥4॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्या तत्व क्या कुतत्व ये, अमूढ़ दृष्टि जानते।
त्रय मूढ़ता को त्याग कर, जिनराज को ही मानते॥ पायें....॥5॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का करें गुणगान हम, मम दोष प्रतिपल दूर हो।
दृष्टि सदा गुण पे रहे, अवगुण मेरे चकचूर हो॥
पायें शरण प्रभु आपकी, ऐसा हमें वरदान दो।
हम कर रहे नित अर्चना, हमको प्रभो सद्ज्ञान दो॥6॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व से ना हम गिरे, और ना गिरे धर्मात्मा।
नित धर्म में अविचल रहे, बस एक प्रभु से प्रार्थना॥ पायें....॥7॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य सबसे जो रखे, तीर्थेश वो प्राणी बने।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम मोक्ष पथगामी बने॥ पायें....॥8॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म नित जयवंत हो, ये ही हमारी भावना।
तीर्थेश पारसनाथ की, इस हेतु है आराधना॥ पायें....॥9॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

रसना इन्द्रिय की लोलुपता, जो भविजन मन से त्यागे।
उसके त्यागमयी भावों से, कर्म बंध जल्दी भागें॥
पार्श्वनाथ भगवन को भज हम, अपना भाग्य जगायेंगे।
रविव्रत करके उत्तम विधि से, मोक्ष संपदा पायेंगे॥

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे निगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं॥
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे॥

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी॥
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अष्टम वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

वर्ष आठवाँ रविव्रत आया, षट्रस भोजन त्याग बताया।
मुनियों ने यह व्रत बतलाया, भक्ति सहित करना सिखलाया॥
पार्श्व प्रभु की भक्ति रचायें, ध्वजा सहित हम अर्घ चढ़ायें।
रविव्रत जो भी करे करावे, व्रत कर मोक्ष महासुख पावे॥1॥

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत उद्यापन जब करवावें, मंदिर में भी रंग करावें।
झूमर तोरण द्वार लगावें, ये भी इक पूजा कहलावें॥ पार्श्व....॥2॥

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर में घंटा लगवावें, दिव्यध्वनि सा अतिशय पावें।
रंगोलीमय चौक बनायें, लक्ष्मी माँ उसके घर आये॥
पार्श्व प्रभु की भक्ति रचायें, ध्वजा सहित हम अर्घ चढ़ायें।
रविव्रत जो भी करे करावे, व्रत कर मोक्ष महासुख पावे॥3॥

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापुरुष की कथा करायें, जीवन में वैराग्य समाये।
व्रत संयम का भाव जगायें, समता भाव उमड़ कर आवें॥ पार्श्व.... ॥4॥

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर दिवार पे चित्र बनायें, मन में प्रभु के चित्र बसायें।
अंत समय जब अपना आवे, जिन चरित्र का ध्यान लगावें॥ पार्श्व.... ॥5॥

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप अखंड विशेष लगायें, महा आरती करें करायें।
केवलज्ञान की ज्योति पाये, जो प्रभु के दर दीप जलाये॥ पार्श्व.... ॥6॥

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की वेदी श्रेष्ठ बनायें, स्वर्ण रत्न उसमें जड़वायें।
दान करें ऐसा जो कोई, स्वर्ग लोक में जन्मे वोही॥ पार्श्व.... ॥7॥

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत में दूध दही घृत त्यागें, गोरस आदि सब कुछ त्यागें।
ये अष्टम रवि व्रत कहलावे, अष्ट करम से हमें छुड़ावे॥ पार्श्व.... ॥8॥

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर में जो शिखर बनाये, स्वर्ण कलश और ध्वजा चढ़ाये।
वो नित मान प्रतिष्ठा पावे, आगे स्वर्ग मोक्ष सुख पावे॥
पार्श्व प्रभु की भक्ति रचायें, ध्वजा सहित हम अर्घ चढ़ायें।
रविव्रत जो भी करे करावे, व्रत कर मोक्ष महासुख पावे॥9॥

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

वर्ष आठवें के रविव्रत में, जो नीरस भोजन करते।
पूजा दान करे विधि पूर्वक, सर्वश्रेष्ठ पद वो वरते॥
जल चंदन अक्षत पुष्पादिक, द्रव्य चढ़ाने हम आये।
पूरण अर्घ चढ़ा हम भगवन्, कर्म श्रृंखला विनशायें॥

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे रूक्षाहार प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करुणावान हैं॥
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे॥

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी॥
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नवम वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(रोला छंद)

चार घातियाँ नाश, श्री अरिहंत कहायें।
उनको हम सब आज, उत्तम अर्घ चढ़ायें॥
रविव्रत नौवे वर्ष, प्रौषध व्रत अपनाये।
पार्श्व प्रभु को ध्याय, सर्व सुखों को पायें॥1॥

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल विमल चिद्रूप, सिद्ध बुद्ध अविनाशी।
अष्ट कर्म से मुक्त, सिद्ध शिला के वासी॥ रविव्रत...॥2॥

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाले पंचाचार, श्री आचार्य हमारे।
आत्म सिद्धि के हेत, इनके चरण पखारें॥ रविव्रत...॥3॥

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठन पठन कराय, उपाध्याय मन भाये।
बुधग्रह दोष नशाय, जो नित गुरु को ध्यायें॥ रविव्रत...॥4॥

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नग्न दिगम्बर रूप, पंच महाव्रत धारी।
क्रूर ग्रहों की चाल, इनके आगे हारी॥ रविव्रत...॥5॥

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म तीर्थ दिनरात, जग में बढ़ता जाये।
दया अहिंसा रूप, जैन धर्म कहलाये।।
रविव्रत नौवे वर्ष, प्रौषध व्रत अपनाये।
पार्श्व प्रभु को ध्याय, सर्व सुखों को पायें।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुयोग है चार, वो है माँ जिनवाणी।
जिनके नाम अनेक, कहते गणधर ज्ञानी।। रविव्रत...।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रतिमा अभिराम, लगती सबको प्यारी।
उनकी भक्ति त्रिकाल, मेटे संकट भारी।। रविव्रत...।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चैत्यालय भव्य, घंटा कलश ध्वजा मय।
जिसको पूजें भव्य, पायें मोक्ष सुखालय।। रविव्रत...।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ *(नरेन्द्र छंद)*

प्रथम परोसा भोजन करते, नवम वर्ष के रविव्रत में।
एक बार ही भोजन करना, कहते मुनिवर रविव्रत में।।
पूजन पाठ करें रविव्रत में, तप संयम हम अपनाये।
अर्पण करने अर्घ प्रभु को, श्रीफल की माला लाये।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे एकस्थानप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं॥
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहें।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहें॥

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी॥
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : (1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमः।
(2) ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय दुष्टग्रह शोक सर्वज्वर रोगाल्पमृत्युविनाशनाय सूर्यव्रतोद्योतनाय नमः।
(जयमाला के पहले ये मंत्र जाप करना चाहिये।) (9, 27 या 108 बार जाप करें)

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

त्रिभुवन वंदित नाथ हैं, पार्श्वनाथ भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें, पाने केवलज्ञान॥

(शंभु छंद)

श्री पार्श्वनाथ वामा नंदन, शत इन्द्रों से पूजें जायें।
वे अश्वसेन ! के राजकुँवर, उनके गुण गाने हम आये॥
प्रभु नगर बनारस में जन्में, ये बाल यतीश्वर कहलाये।
सम्मेद शिखर से पार्श्व प्रभु, सिद्धों का शाश्वत पद पायें॥1॥

दस भव तक जिसने कष्ट दिया, वो कमठ क्रूर अति पापी था।
अरविन्द राज का मंत्री मित्र, मरुभूति सरल स्वभावी था।।
भाई के मोही मरूभूति, उसके पग में झुक जाते हैं।
तब कमठ करे हत्या उनकी, मरूभूति गज बन जाते हैं।।2।।

अब कमठ विषैला सर्प बना, हाथी को आकर डसता है।
हाथी द्वादशवे स्वर्ग गया, वह सर्प नरक में फसता है।।
जब अग्निवेग मुनि ध्यान करें, अजगर उनको ग्रस जाता है।
मुनिराज सोलवे स्वर्ग गये, अजगर पाताल सिधाता है।।3।।

प्रभु वज्रनाभि चक्रीश बने, ध्यानस्थ खड़े जब जंगल में।
तब कमठ भील बन बाण छोड़, उपसर्ग करें उन मुनिवर पे।।
मुनि मध्यम ग्रैवेयक पहुँचे, वह भील सातवें नरक गया।
प्रभु श्रमण श्रेष्ठ आनंद बने, सिंह ने उन पर उपसर्ग किया।।4।।

मुनि प्राणत स्वर्ग सिधार गये, वह सिंह पाँचवें नरक गया।
नाना गतियों में दुःख पाकर, वो महीपाल भूपाल बना।।
वामा माँ से जन्में पारस, यौवन वय में मुनि बन जायें।
ध्यानस्थ मुनि को देख कमठ, पत्थर अग्नि जल बरसाये।।5।।

उस कमठ दैत्य ने सात दिवस, जिनवर पर अति उपसर्ग किया।
धरणेन्द्र देव पद्मावती ने, उपसर्ग नाथ का दूर किया।।
केवलज्ञानी प्रभु पार्श्व बने, वह कमठ हृदय में पछताया।
दस भव तक जिसने कष्ट दिया, वह भी प्रभु की शरणा आया।।6।।

समताधारी उपसर्गजयी, तेरी महिमा हम क्या गायें।
समता का हमको भी वर दो, हम यही भावना नित भाये।।
चिंतामणि पार्श्व जिनेश्वर को, 'आस्था' भक्ति से नित ध्याये।
अतिशयकारी रविव्रत धारें, व्रत समिति गुप्ति हम अपनायें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं धरणेन्द्रपद्मावतीसहितायदुष्टग्रहशोकसर्वज्वर-रोगाल्पमृत्युविनाशनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी॥
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

(दोहा)

पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
शांतिनाथ के चरण में, वंदन बारम्बार॥1॥

गणधरश्रुत गुरु पाँच जो, परमेष्ठी त्रयकाल।
कुंथु कनक गुरुराज को, सदा नमाऊँ भाल॥2॥

गुप्तिनंदी गुरुराज को, सदा झुकाऊँ शीश।
सम्पादन उनने किया, देकर शुभ आशीष॥3॥

पौष शुक्ल की पूर्णिमा, रविपुष्यामृत योग।
ये विधान रविव्रत लिखा, पाने को शुभ योग॥4॥

ज्येष्ठ शुक्ल की सप्तमी, पूरण किया विधान।
रविवार रविव्रत करें, पानें मुक्ति महान॥5॥

काव्य कला जानूँ नहीं, ना छंदों का ज्ञान।
भक्ति के वश में लिखा, प्रभु पे कर श्रद्धान॥6॥

जब तक सूरज चाँद है, तब तक रहे विधान।
पार्श्व प्रभु के नाम का, होता रहे विधान॥7॥

पार्श्व प्रभु के चरण में, 'आस्था' करें प्रणाम।
हाथ-जोड़ विनती करें, पाये मुक्ति धाम॥8॥

॥ इति अलम्॥

अर्घावली

श्री जिनवाणी माता (चामर छंद)

जल-फलादि दिव्य वस्त्र अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।।
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री तीन कम नवकोटि मुनिराज (शंभु छंद)

जल, चंदन, अक्षत, दीप, धूप, नैवेद्य, हरित फल लाया हूँ।
अन्तर में भक्तिभाव लिये ऋषिराज शरण में आया हूँ।।
नवकोटि न्यून त्रय मुनियों को मैं वंदन बारम्बार करूँ।
बन जाऊँ मुनिमन सम निर्मल यह शुद्ध भावना हृदय धरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री अढ़ाई द्वीपस्थ न्यून त्रय नवकोटि श्रमणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव का अर्घ *(जोगीरासा छंद)*

कुंथुसागर-कुन्थुसागर, जय-जय कुन्थुसागर।
हे वात्सल्य निधि गुरुदेवा !, ज्ञान रवि रत्नाकर।।
भोले बाबा बड़े दयालु, गुरुवर हमको प्यारे।
पूजा करने हम सब आये, गुरुवर तेरे द्वारे।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य ग. गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्यरत्न श्री कनकनंदीजी गुरुदेव का अर्घ *(जोगीरासा छंद)*

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ, ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे, सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है, यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजा हम, गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य वैज्ञानिक धर्माचार्य आचार्यरत्न श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प.पू. प्रज्ञायोगी आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव की पूजा

स्थापना (गीता छंद)

छत्तीस गुणधारी गुरु, पालन करें त्रय गुप्तियाँ।
गुरु गुप्तिनंदी धर्म की, नित बाँटते हैं सूक्तियाँ॥
ऐसे गुरु की अर्चना, सौभाग्य से हमको मिले।
आह्वान करने आपका, हम पुष्प ले आये खिले॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

(नरेन्द्र छंद)

काव्य कुशलता गुरुवर तेरी, प्रमुदित भाव बनाती है।
इतनी प्यारी वाणी तेरी, हमको राह दिखाती है॥
करें पाद-प्रक्षाल नीर से, जन्म-जरा-मृत हर लेना।
हे गुप्तिनंदी ! सूरिश्वर, हमको चरण-शरण देना॥1॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाराच छंद)

आप पादपद्म में, सुगंध ये लगा रहे।
पाप ताप नाश हेत, शीश पे लगा रहे॥
आपकी सदा करें, सुभक्ति से सुअर्चना।
गंध आपको चढ़ा, करें सदा सुवंदना॥2॥

ॐ ह्रीं.....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपेन्द्रवज्रा छंद)

अखंड अक्षत गजमोती लाये, गुरु चरण में अक्षत चढ़ायें।
गुरु के जैसा कोई न दूजा, करें सदा हम गुरु की पूजा॥
गुरु गुप्तिनंदी त्रय गुप्तिधारी, कृपालू गुरुवर जय हो तुम्हारी।
महाकविश्वर विनती हमारी, सदा करें हम भक्ति तुम्हारी॥3॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

रंग बिरंगे फूल, चढ़ा रहे हम माला।
पाने तव पद धूल, आये शरण कृपाला।।
कुंथु गुरु के लाल, सबके कष्ट मिटायें।
बालयति गुरु गुप्ति, हम सब शीश झुकायें।।4।।

ॐ ह्रीं.....कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(पंच चामर छंद)

जहाँ-जहाँ गुरु चले, वहाँ करे प्रभावना।
करें प्रचार धर्म का, सुज्ञान की सुभावना।।
मनोज्ञ ले मिठाइयाँ, सुअर्चना रचा रहे।
क्षुधादि रोग नाशने, सुभक्ति से चढ़ा रहे।।4।।

ॐ ह्रीं..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

लक्ष्य-लक्ष्य दीपों से गुरु की आरती।
गुरु आरती मोह तिमिर परिहारती।।
वीणा ढ़पली ढ़ोल मृदंग बजा रहे।
नृत्य गीत संग, हम सब भक्ति रचा रहे।।6।।

ॐ ह्रीं.....मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

जिनवाणी के सूत्र बताते, जिनवाणी घर-घर पहुँचाते।
विधि विधान के गुरुवर ज्ञाता, दुःखियों के हो भाग्य विधाता।।
गुरु के रंग में हम रंग जायें, गुरु भक्ति की धूम मचायें।
सुरभित होवे दशों दिशायें, ऐसी गुरु को धूप चढ़ायें।।7।।

ॐ ह्रीं..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

गुप्ति गुरुवर हर भक्तों को, जिनवृष[1] की शिक्षा देते हैं।
उनके संस्कारों को पा हम, जिनधर्म सुधानंद लेते हैं॥
हे कविहृदय ! प्रज्ञायोगी, हम तेरी महिमा गाते हैं।
नाना रंगों के हरे-भरे, शुचि फल के गुच्छ चढ़ाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं ..... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया॥
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये॥9॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा- शांति पथ पर चल रहे, गुप्तिनंदी गुरुराज।
त्रय धारा हम नित करें, पाने सुख का राज॥ शांतये शांतिधारा.....

दोहा- निर्गुंडी उत्पल जुही, कमल केवड़ा फूल।
गुरु चरणों में भेंट हैं, पाने चरणन् धूल॥ दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रूँ गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सखी छंद- गुरु की जयमाला गायें, सुन्दर सी थाल सजायें।
नाना द्रव्यों की थाली, ध्वज श्रीफल नेवज वाली॥

(शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी का जयकार कीजिये।
गुरु नाम मंत्र का सदैव जाप कीजिये॥
कुंथु गुरु के लाल का सुंदर सा प्यारा नाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥1॥

1. जिनधर्म।

है जन्म भूमि आपकी भोपाल नगरिया।
नगरी को छोड़ आप चले मोक्ष डगरिया॥
माता-पिता ने आपका राजेन्द्र रखा नाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥2॥

कुंथु गुरु के पास में ली आपने दीक्षा।
गुरु कनकनन्दी जी से ली है ज्ञान की शिक्षा॥
मुनि से बने आचार्य आप गोम्मटेश[1] धाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥3॥

पूजन भजन विधान कवितायें बनायें।
जिनभक्त को जिनभक्ति में गुरुदेव लगायें॥
हर एक विषय का विशेष आपको है ज्ञान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥4॥

सब कर्म-कष्ट-रोग हरे रत्नत्रय विधान।
धन-धान्य से पूरण करें, गणधर वलय विधान॥
सुख-शांति विद्या ऋद्धि देवें, चालीसा प्रधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥5॥

श्री विजय पताका त्रिकाल चौबीसी विधान।
श्री तीस चौबीसी नवग्रह शांति का विधान।
जिन पंचकल्याणक व सिद्धचक्र का विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥6॥

है सर्वकार्य सिद्धी व श्रुतदेवि का विधान।
जिनदेव के विधान हैं कविता में सावधान॥
इत्यादि गुरुदेव ने लिखे सरल विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥7॥

गुरुवर जहाँ चरण धरें वो भूमि तीर्थ है।
गुरुवर की प्रेरणा से बना धर्म तीर्थ है॥

1. गोम्मटगिरी, इन्दौर।

भक्ति से 'आस्था' करें, गुरुदेव का गुणगान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी आर्षमार्ग संरक्षक, श्रावक संस्कार उन्नायक, कविहृदय, महाकवि आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्रद्धा से 'आस्था' नमे, जोड़े दोनों हाथ।
गुरु चरणों में विनय से, सदा झुकाऊँ माथ।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आचार्य, उपाध्याय, साधु परमेष्ठी का अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

रत्नत्रय पथ पर चल करके, मोक्ष मार्ग दर्शाया।
मुनि बने बिन मोक्ष नहीं है, जग को यह दिखलाया।।
ऐसे गुरुवर साधू पाठक, श्री आचार्य हमारे।
उन निर्ग्रंथ तपोधन गुरु की, पूजा भव से तारे।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा....)

दुःखियों के संकट हरें, गुप्तिनंदी गुरुराज।
आश ये ला रहे, द्वार पे आ रहे, दे दो शरण गुरु आज..।।
हे प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी जी, तुमको है अर्घ समर्पण मेरा।
आशीष देना, चरणों में लेना, चमका दो गुरुवर जीवन मेरा।
थाल सजायेंगे, वाद्य बजायेंगे, भक्ति से गुरुवर का कीर्त्तन करें।
भक्ति रचायेंगे, नृत्य रचायेंगे, गुरुवर के चरणों में वंदन करें।
भक्तों के मन में बसे, गुप्तिनन्दी गुरुराज।। आश ये ला रहे..।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(तर्ज- नसे घातियाँ...)

परमेष्ठियों को सदा मैं ध्याऊँ, माँ शारदे को शीश नवाऊँ।
अनेकांत मय ये धर्म है प्यारा, सब पापों से हो छुटकारा॥1॥

पंचसुमेरु के अस्सी जिनालय, भव्यों के सुख के हैं आलय।
बावन जिन चैत्यालय प्यारे, नंदीश्वर हैं सब मनहारे॥2॥

तीनलोक के कृत्रिमाकृत्रिम, चैत्यालय में हैं जिनबिम्ब।
उनको नित प्रति अर्घ चढ़ाऊँ, भाव वंदना से सुख पाऊँ॥3॥

सम्मेदगढ़ गिरनार गिरी को, चम्पापुरी और पावापुरी को।
सोनागिर मथुरा चौरासी, बाहुबली गोम्मटगिरी वासी॥4॥

आदि सभी तीरथ को ध्याऊँ, उनको नितप्रति अर्घ चढ़ाऊँ।
सीमंधर आदि जिन स्वामी, पूजा करूँ मैं हे जगनामी॥5॥

दोहा : अष्टद्रव्य का थाल ले, अर्घ चढ़ाऊँ आज।
इहभव-परभव सफल हो, सिद्ध होय सब काज॥

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, नवग्रह धर्मतीर्थ वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव

आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत-भविष्यत-वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते-नगरे..... मासानांमासे.....मासे..... पक्षे..... तिथौ..... वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शांतिनाथ हैं जगहितकारी, शान्ति प्रदाता मंगलकारी।
सौम्य शांत प्रतिमा जो लखता, भवसागर से वह नर तिरता॥1॥

शरण तुम्हारी जो भी आता, मंगलमय शिवपद पा जाता।
पूजा प्रतिदिन भाव से करता, वह नर कभी न दुःख में पड़ता॥2॥

(यह श्लोक बोलते समय शांतिधारा करें)

शांतिधारा तुम्हें चढ़ाऊँ, प्रभु सम शांति मैं पा जाऊँ।
जग जीवों को शांति कर दो, धर्म सुधारस सब में भर दो॥3॥

दुःखी दरिद्री रहे न कोई, सबकी मति धर्ममय होई।
देव गुरू की शरणा पायें, भव दुःखों से न घबरायें॥4॥

राजा-प्रजा सभी नर-नारी, भक्ति करते सभी तुम्हारी।
भक्त से वे भगवान हैं बनते, मुक्ति रमा पा सुख में रमते॥5॥

विसर्जन पाठ

(दोहा)

प्रमादवश मैंने प्रभो! की पूजा में चूक।
अज्ञानी हूँ नाथ मैं क्षमा करो शिव भूप॥1॥

भक्ति भाव में मन लगा पाऊँ तुम सम रूप।
चरण शरण पा आपकी काटूँ कर्म अनूप।।2।।

तीन काल त्रैलोक्य में कोई न सच्चा देव।
जगत भ्रमण अब तक किया पूजें देव-कुदेव।।3।।

सत्य लगन हुई आपसे मिट गई मन की प्यास।
सम्यग्दर्शन निधि मिले छूटे भव की त्रास।।4।।

श्री जिन पूजन यज्ञ में आये जो-जो देव।
धर्मप्रेम रख जिन भुवन, आयें नित्य सदैव।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा। इत्याशीर्वादः

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : भगवंतों की आशिका, धारण करता शीश।
भव बंधन मेरे कटें, शरण पाऊँ जगदीश।।

***

(1) विधान की आरती

(तर्ज - सगला चालो रे....)

आओ आओ रे प्रभु के द्वारे चले आओ, चले आओ....
झूम-झूम के पार्श्व प्रभु की आरती गाओ।। आओ-आओ...

ये विधान रविव्रत सुखकारी, सबके संकट हरता।
दुःख-दारिद्र्य नशाने भगवन्, मैं भी रविव्रत करता।। आओ-आओ...

वामा माँ के राजदुलारे, अश्वसेन के प्यारे।
नगर बनारस में प्रभु जन्मे, सबके तारणहारे।। आओ-आओ...

सारंगी वीणा आदिक ले, सात सुरों में गाओ।
पारस बाबा के मंदिर में, दीपावली मनाओ।। आओ-आओ...

छम-छम बजते पायल घुंघरु, वाद्य सुमंगल बाजे।
हर भक्तों के मन में देखो, पारसनाथ विराजे।। आओ-आओ...

केवलज्ञानी पारस स्वामी, केवल इतना वर दो।
'आस्था' से हम करें आरती, केवल ज्योति वर दो।। आओ-आओ...

***

(2) चिंतामणि पार्श्वनाथ की आरती

(तर्ज - मिलो ना तुम तो हम....)

हे धरणेश्वर, हे परमेश्वर, झुक-झुक शीश झुकायें।
करें हम आरती....

हे तीर्थेश्वर, हे परमेश्वर, चरणों में हम आये।।
करें हम आरती....

1. पद्मावती माँ ने, शीश बिठाया प्रभु आपको।
यक्ष धरणेन्द्र ने, छत्र लगाया प्रभु आपको।।
समता धारी पार्श्व जिनेशा, गुण तेरे नित गाये।
करें हम आरती..

2. सात फणों से लेकर, सहस्र फणा है प्रभु आपपे।
पार्श्वनाथ प्रतिमा के, फण ही सरल पहचान है।।
पद्मावती धरणेन्द्र आपके, भक्त विशेष कहाये।
करें हम आरती..

3. हर एक मंदिर में, प्रतिमायें होती पार्श्वनाथ की।
हर एक प्राणि के, मन में बसे हैं पार्श्वनाथ जी।।
जग-मग जग-मग ज्योति जलाये, 'आस्था' भी हर्षाये।
करें हम आरती..

रविवारव्रत उद्यापनम्।

नत्वा श्रीमज्जिनाधीशं, सर्वज्ञं सुखदायकम्।
वक्ष्ये सूर्यव्रतंयस्य पूजा सौख्यं प्रदायिनी॥1॥
आदौ गंधकुटीपूजा, ततस्नपनमाचरेत्।
पश्चात् कोष्ठगता पूजा, कर्तव्या विबुधोत्तमैः॥2॥
पार्श्वनाथजिनेन्द्रस्य,प्रतिमां परमां शुभाम्।
आह्वाननादि विधिना, स्थापयेत् स्वस्तिकोपरि॥3॥
पाश्चात् पूजा प्रकर्तव्या, विधिवदष्टधा मुदा।
उत्तमां सर्वसामग्रीं, मेलयित्वा त्रिशुद्धितः॥4॥

इति जिनपूजनप्रतिज्ञापनाय जिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्थापना

स्वामिन् संवौषट् कृताह्वाननस्य, दिष्टं तेनोटङ्कित स्थापनस्य।
स्वर्निर्नेक्तुं वषट्कारजागृत्, सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टसिद्धिम्॥

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणिपार्श्वनाथ अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्। ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमो नमः। ॐ ह्रीं स्वस्ति-स्वस्ति, जीव-जीव, नन्द-नन्द, वर्धस्व-वर्धस्व, विजयस्व-विजयस्व, अनुसाधि-अनुसाधि पुनिहि-पुनिहि, पुण्याहं-पुण्याहं, प्रियंताम्-प्रियंताम्, मंगलं-मंगलं, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अष्टकम्

क्षीरहीरगौरनीर पूरवारिधारया।
मन्दकुन्दचन्दनादिसौरभेण सारया।
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्।
पूजयाम्यचिन्तितार्थदं हि पार्श्वनायकं॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणिपार्श्वनाथाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्कतर्कवर्जनैरनर्घचन्दनद्रवैः।
कुंकुमादिमिश्रितैरनल्पषट्पदाश्रितैः॥

चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्।
पूजयाम्यचिन्तितार्थदं हि पार्श्वनायकं॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणिपार्श्वनाथाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

औषधेन सिन्धुफेनहार भासमुज्वलै–
रक्षितैः सुलक्षितैरजोतखण्डवर्जितैः॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्। पूजयाम्य..॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणिपार्श्वनाथाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजातवारिसूतकुन्दहेमकेतकैः।
मालतीसुचंपकादिसारपुष्पमालया॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्। पूजयाम्य..॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणिपार्श्वनाथाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजनेन पायसादिभिः समं च षट्ररसैः।
मोदकोदनादिभिः सुवर्णभाजनस्थितैः॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्। पूजयाम्य..॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणिपार्श्वनाथाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नसोसर्पिषादिदीपकैः कृतोज्वलैः।
वातघातकोपतोपकंपरूपवर्जितैः॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्। पूजयाम्य..॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणिपार्श्वनाथाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सीलिकासितागुरुप्रधूपकैः शुभप्रदैः।
वानमानवर्धमानमाननीमनोहरैः॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्। पूजयाम्य..॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणिपार्श्वनाथाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफलाम्रकर्कटीसुदाडिमादिभिः फलैः।
वर्णमिष्टसौरभादिचक्षुरादिमौदनैः॥
चिन्तितार्थकामधेनुकल्पवृक्षदायकम्। पूजयाम्य..॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणिपार्श्वनाथाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवनासितागुरुद्रवाक्षतैः प्रसूनकैः।
शुभैश्चरुप्रदीपकैः सुधूपरूपसत्फलैः॥
सुवर्णभाजनस्थितैरमारमारमाभिधैः।
ज्ञानभूषणायकं महामुनिगवीक्षते॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणिपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक पूजा

(1)

आषाढ़ शुक्लपक्षस्य प्रथमो रविवासरे।
तद्दिने प्रोषधं कुर्यात् सूर्यव्रतप्रसिद्धये॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतप्रथमोपवासप्रोषधोद्योतनाय श्रीजिनेन्द्राय जलचन्दनाक्षतपुष्प-चरुदीपधूप फलार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीयादित्यवारे च प्रोषधं यः तपस्यति।
पूर्वसूरिसदाचारी सूर्यव्रतप्रसिद्धये॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीयादित्यवारे च प्रोषधं हि करोति यः।
तस्य स्यात् सर्वसिद्धिश्च सूर्यव्रतप्रसिद्धये॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशुद्ध्या प्रोषधं कुर्यात् चतुर्थे रविवासरे।
पुण्येन तेन संसिद्धिः सूर्यव्रतप्रसिद्धये॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

यः कुर्यात् प्रोषधं भव्यं, पंचमे सूर्यवासरे।
धनधान्यागमस्तस्य सूर्यव्रतप्रसिद्धये॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतपंचमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठे हि रविवारे च प्रोषधं परमादरात्।
यः करोति स धन्यश्च सूर्यव्रतप्रसिद्धये॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतषष्ठमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तमे रविवारे च प्रोषधो हि करोति यः।
सर्वसिद्धिर्गृहे तस्य सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे रविवारे च प्रोषधं सुखदायकम्।
सुखार्थं कुरुते नित्यं सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतअष्टमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रोषधं सुखदं कुर्यात् नवमे रविवासरे।
सर्वसंपदगृहे तस्य सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतनवमोपवासप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

आषाढशुक्लादारभ्य नवेति सूर्यवासराः।
प्रोषधेन समं कुर्यात् स नरःसुखमेधते॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं प्रथमवर्षेरविव्रतोपवासप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2)

आषाढ़मासे खलु शुक्लपक्षे, सूर्यादिवारे द्वितीये च वर्षे।
आचाम्लभुक्तं पुनरेकवारं, करोति यः सर्वसुखं लभते॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे प्रथमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीयवर्षसम्बन्धिद्वितीये सूर्यवासरे।
कांजिकाहारकं कुर्यात् स्वर्गसोपानप्राप्तये॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे द्वितीयकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीयवर्षसम्बन्धितृतीये रविवासरे।
तद्दिने कांजिकाहारं कुर्वन्तु व्रतसिद्धये॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे तृतीयकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीये खलु वर्षे च चतुर्थे रविवारसे।
तद्दिनो कांजिकाहारं कर्तव्यं भव्यसत्तमैः ॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे चतुर्थकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीयवर्षसम्बन्धि, पञ्चमे सूर्यवासरे।
कांजिकाहारं वै कुर्यातसुखसम्पत्तिहेतवे ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे पंचमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वर्ष के रम्ये, षष्ठे च रविवासरे।
कांजिकाहारभोक्तव्यं, सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे षष्ठमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षे द्वितीये भो भव्याः कांजिकाहारमुत्तमं।
कुर्वन्तु सर्वदा नित्यं सप्तमे सूर्यवासरे ॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे सप्तमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीयवर्षे संजाते रविवारे चाष्टमे पुनः।
कांजिकाहारभुक्तिश्च कर्तव्या व्रतशुद्धये ॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे अष्टमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीयवर्षसंजाते नवमे रविवासरे।
सम्प्रोक्तं कांजिकाहारं व्रतसिद्धयै विदांबरैः ॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे नवमकांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय जलादिकं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्यव्रतस्य सम्बन्धि कांजिकाहारकान्नव।
कृत्वा च द्वितीयेवर्षे पार्श्वनाथंच पूजयेत्॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतद्वितीयवर्षे कांजिकाहारप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3)

वर्षे तृतीये पुनरागते च क्षारं रसं त्याज्य करोति मुक्तिम्।
आषाढमासे प्रथमे च पक्षे सूर्यादिवासरे लभते सुखंसः ॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितप्रथमैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीयवर्षे सम्बन्धि द्वितीये रविवासरे।
तद्दिने चैकभुक्तं च कर्तव्यं लवणं विना॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितद्वितीयभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय रविवासरे च तृतीय वर्षे पुनः।
लवणेन रहिता भुक्तिःकर्तव्या व्रतसिद्धये॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहिततृतीयैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थे रविवारे च तृतीये वर्षे मुदा।
लवणेन विना भुक्तिः करयेत् सुविचक्षणैः॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितचतुर्थैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमे सूर्यवारे हि, वत्सरे तृतीये पुनः।
लवणेन विना भुक्तिः, क्रियते व्रतधारकैः॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितपंचमैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठे हि रविवारे च लवणे विना नरः।
भुक्ति कुर्यात् स पूतात्मा, तृतीये वर्षे मुदा॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितषष्ठैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तमे सूर्यवारे च वत्सरे हि तृतीयके।
लवणेन विना भुक्ति कुर्वन्तु व्रत सिद्धिये॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितसप्तमैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे सूर्यवारे च तृतीयवत्सरे पुमान्।
लवणेन विनाभुक्तिं यः करोति स धर्मभाक्॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितअष्टमैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीये वत्सरे जाते नवमे रविवासरे।
लवणेन विना भुक्ति कुर्वन्तु हितचिंतकाः॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितनवमैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमुनाहि प्रकारेण कुर्वन्ति ये नराः शुभम्।
व्रतमादित्यसंज्ञं च ते नराः धर्मनायकाः॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रततृतीयवर्षे लवणरहितैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4)

आषाढमासे खलु शुक्लपक्षे वर्षे चतुर्थे पुनरागते चः।
सूर्यादिवारे चटुकप्रमाणं भोक्तव्यमशनंव्रतधारकेण॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे प्रथमैकचाटुकप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थे वत्सरे जाते द्वितीये रविवासरे।
चाटूवैकमन्नं भोक्तव्यं, सूर्यव्रतप्रसिद्धये॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे द्वितीयैकचाटुकप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षे चतुर्थसंजाते तृतीय रविवासरे।
एकचाटुप्रमाणान्नं भोक्तव्यं व्रतसिद्धये॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे तृतीयैकचाटुकप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षे चतुर्थेचतुर्थे हि वासरे रविसंज्ञके।
एकचाटुप्रमाणान्नं भोक्तव्यं व्रतसिद्धये॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे चतुर्थैकचाटुकप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थे वत्सरे जाते, पंचमे सूर्यवासरे।
एकचाटुप्रमाणान्नं भोक्तव्यं व्रतधारिणा॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे पंचमैकचाटुकप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थे हि समायाते षष्ठे रविदिने तथा।
चाटुप्रमाणं भोक्तव्यं रविव्रतविशुद्धये॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे षष्ठैकचाटुकप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षे चतुर्थे संजाते, सप्तमे रविवासरे।
एकचाटुप्रमाणान्नं भोक्तव्यं परमादरात्॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे सप्तमैकचाटुकप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे रविवासरे च वर्षे च चतुर्थे मुदा।
चाटूवैकमन्नं भोक्तव्यं सूर्यव्रतविशुद्धये॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे अष्टैकचाटुकप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षे चतुर्थे नवमे च वासरे सूर्यसंज्ञके।
चाटुप्रमाणं भोक्तव्यं सूर्यव्रतविधायकैः॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे नवमैकचाटुकप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थवर्षमध्ये च, सूर्ये सूर्ये हि वासरे।
नवमं चाटुकं कृत्वा, पार्श्वनाथं प्रपूजयेत्॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे चाटूकैकभुक्तिचाटुकप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(5)

आषाढशुक्लपक्षस्य प्रथमादित्यवासरे।
तक्रोदनं च भोक्तव्यं केवलं वर्षपंचमे॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतपंचमेवर्षे प्रथमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षे पंचमे जाते, द्वितीये सूर्यवासरे।
निवेडनामभुक्तिश्च, कर्तव्या व्रतधारिणा॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतपंचमेवर्षे द्वितीय निवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तक्रोधनं हि भोक्तव्यं वत्सरे पंचमे तथा।
तृतीये सूर्यवारे च सूर्यव्रतकविधायकैः॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतपंचमेवर्षे तृतीयनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षे पंचमके भव्यैः कर्तव्यं हि निवेडकं।
चतुर्थे सूर्यवारे च रविव्रतविशुद्धये॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतपंचमेवर्षे चतुर्थनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेष्टे समायते, पंचमे रविवासरे।
निवेडनामभुक्तिश्च, कर्तव्या व्रतधारकैः॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतपंचमेवर्षे पंचमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेष्टे समायते, षष्ठे च रविवासरे।
निवेडप्रोषधं कुर्यात्, सूर्यव्रतप्रसिद्धये॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतपंचमेवर्षे षष्ठनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तमे रविवारे च निवेडं च प्रकारयेत्।
पंचमे वत्सरे भव्यः आदित्यव्रतसिद्धये॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतपंचमेवर्षे सप्तमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे सूर्यवारे चं पंचमे वत्सरे मुदा।
निवेडभुक्तिमादाय पार्श्वनाथं प्रपूजयेत्॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतपंचमेवर्षे अष्टमनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेष्टे समायाते, नवमे रविवासरे।
तक्रोदनं च भोक्तव्यं केवलं व्रतधारिणा॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतपंचमेवर्षे नवमंनिवेडप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निवेड नवमे प्रोक्तं, पंचमे वत्सरे शुभे।
पूजनं पार्श्वनाथस्य, स्मरणं भजनं कुरु॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतपंचमेवर्षे भुक्तिप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6)

एकान्नं च भोक्तव्यं वर्षे षष्ठे समागते।
आषाढशुक्लपक्षस्य प्रथम रविवासरे॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे प्रथमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठे संवत्सरे जाते, द्वितीय रविवासरे।
एकान्नमेव भोक्तव्यमरान्नं न सर्वथा॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे द्वितीयैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यप्रमाणवर्षे हि, तृतीय सूर्यवासरे।
एकान्नभुक्तिः कर्तव्या, सूर्यव्रतविधायकैः॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे तृतीयैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थे सूर्यवासरे च वर्षे षष्ठे तथैव च।
एकान्नभुक्तिः संप्रोक्ता सूर्यव्रतप्रकाशकैः॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे चतुर्थैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षे षष्ठे समायाते, पंचमे रविवासरे।
एकान्नमेव भुँजीत, सूर्यव्रतविधायकैः॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे पंचमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकान्नभुक्तिः संप्रोक्ता, सूर्यव्रतप्रकाशकैः।
षष्ठे वर्षे प्रयाते च षष्ठे मार्तण्डवासरे॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे षष्ठैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्टे ष्टे सम्पयाते च, सप्तमे भानुवासरे।
एकान्नभुक्तिः कर्तव्या, सूर्यव्रतविधायकैः॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे सप्तमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे रविवासरे च षष्ठे वर्षे सुखार्थिभिः॥
एकमन्नं हि भोक्तव्यं सूर्यव्रतप्रकाशकैः॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे अष्टमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठे संवत्सरे जाते, नवमे सूर्यवासरे।
एकान्नभुक्तिः संप्रोक्ता, सूर्यव्रतप्रकाशकैः ॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे नवमैकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठे वर्षे प्रकर्तव्या, नव चैकान्नभुक्तयः।
आषाढमासमारम्भ, सूर्ये च वासरे मुदा ॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे एकान्नभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7)

आषाढमासे शुभशुक्लपक्षे मार्तण्डवारे खलु सप्तमाद्ये।
निगोरसं भोजनमेकवारम् कर्तव्यमादित्य व्रताय भव्यैः ॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे प्रथमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तमेष्टे समायते, द्वितीये रविवासरे।
गोरसं नैव भोक्तव्यं, दधिदुग्धघृतादिकं ॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे द्वितीयनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तमे वत्सरे जाते, तृतीये सूर्यवासरे।
गोरसेन विना सर्व, भोक्तव्यं व्रतधारिणा ॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे तृतीयनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थे रविवासरे च वर्षे सप्तमके तथा।
गोरसं नैव भोक्तव्यं, सूर्यव्रतविधायकैः ॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे चतुर्थनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तमेष्टे समायते, पंचमे रविवासरे।
दुग्धं दधि घृतं नैव, भोक्तव्यं व्रतधारिणा ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे पंचमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठे हि रविवारेच वर्षे सप्तमके धृवं।
गोरसं सर्वथा त्याज्यं, सूर्यव्रतविधायकैः ॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे षष्ठमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तमे वर्षे संप्राप्ते, सप्तमे रविवासरे।
गोरसं नैव भोक्तव्यं, सूर्यव्रतविधायकैः ॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे सप्तमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे रविवारे हि, सप्तमे वत्सरे मुदा।
दधिदुग्धघृतं त्याज्यं, सूर्यव्रतविशुद्धये॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे अष्टमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संजाते सप्तमे वर्षे नवमे रविवासरे।
गोरसं सर्वथा त्याज्यं सूर्यव्रतविशुद्धये॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे नवमनिगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तमे वर्षमध्ये हि, विना गोरसभोजनं।
कुर्वंति जनास्तेषां, सुखंस्यात् स्वर्गमोक्षजं॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे निगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8)

अष्टमाब्दे समायाते, रुक्षाहारास्तु कारयेत्।
आषाढशुक्लपक्षस्य, प्रथमें रविवासरे॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रताष्टमेवर्षे प्रथमरुक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे हायने जाते, द्वितीये रविवासरे।
भोजनं एकवारं च, घृततैलविना बुधैः॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रताष्टमेवर्षे द्वितीयरुक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे वत्सरे प्राप्ते तृतीये रविवासरे।
रुक्षाहारो हि कर्तव्यः सूर्यव्रतविधायकैः॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रताष्टमेवर्षे तृतीयरुक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे वत्सरे प्राप्ते चतुर्थे भानुवासरे।
रुक्षाहारस्तु कर्तव्यः सूर्यव्रतविशुद्धये॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रताष्टमेवर्षे चतुर्थरुक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्वत्सरेऽष्टमे प्राप्ते पश्चमे रविवासरे।
रुक्षाहारस्तु कर्तव्यः सूर्यव्रतप्रसिद्धये॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रताष्टमेवर्षे पंचमरुक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षाष्टमे हि संजाते, षष्ठे मार्तण्डवासरे।
घृततैलं हि संत्याज्य, सूर्यव्रतप्रसिद्धये॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रताष्टमेवर्षे षष्ठमरुक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तमे सूर्यवासरे च अष्टमे संवत्सरे गते।
रुक्षाहारं हि कर्तव्यं प्राशुकैः व्रतधारिकैः॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रताष्टमेवर्षे सप्तरुक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे हायने प्राप्ते, रविवारेऽष्टमे पुनः।
रुक्षाहारं हि कर्तव्यं, सूर्यव्रतप्रसिद्धये॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रताष्टमेवर्षे अष्टमरुक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमेष्टे समायाते, नवमे रविवासरे।
रुक्षाहारस्तु कर्तव्यः, रविव्रतविशुद्धये॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रताष्टमेवर्षे नवमरुक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे वर्षमध्ये च रूक्षाहारस्तु कारयेत्।
घृततैलं च संत्याज्यं सूर्यव्रतविधायकैः॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रताष्टमेवर्षे रुक्षाहारप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(9)

आषाढ़मासे खलु शुक्लपक्षे, मार्तण्ड नवमे हि वर्षे।
भुक्तिश्चकुर्यात् खलु चैकवारं, एषा विधिः श्रीमुनिभिः प्रयुक्ता॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतनवमेवर्षे प्रथमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमेष्टे समायाते, द्वितीये सूर्यवासरे।
एकस्थानं च कर्तव्यं, सूर्यव्रतविधायकैः॥2॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतनवमेवर्षे द्वितीयैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हायने नवमे जाते, तृतीये रविवासरे।
एकस्थानं विधेयं च, सूर्यव्रतविशुद्धये॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतनवमेवर्षे तृतीयैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमे वत्सरे प्राप्ते, चतुर्थे सूर्यवासरे।
एकस्थानं प्रकर्तव्यं, सूर्यव्रतविधायकैः ॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतनवमेवर्षे चतुर्थैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमे वर्षे मध्ये च, पंचमे रविवासरे।
तद्दिने युगपदं ग्राह्यं, भोजन व्रतशुद्धये ॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतनवमेवर्षे पंचमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमे हायने प्राप्ते, षष्ठे मार्तण्डवासरे।
एकस्थानं प्रकर्तव्यं, सूर्यव्रतविधायकै ॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतनवमेवर्षे षष्ठमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमे च वर्षे प्राप्ते, सप्तमे सूर्याभिधानकैः।
सप्तमे युगपदग्राह्यं, भोजन व्रतधारिणा ॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतनवमेवर्षे सप्तमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमे भानुवारे च, नवमेष्टे प्रकारयेत्।
एकस्थानं हि भो भव्याः सूर्यव्रतप्रसिद्धये ॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतनवमेवर्षे अष्टमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमे वत्सरे जाते, नवमे सूर्यवासरे।
युगपद् भोजनं ग्राह्यं, सूर्यव्रतविधायकैः ॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतनवमेवर्षे नवमैकस्थानप्रोषधोद्योतनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमुना हि प्रकारणे, कर्तव्यं सूर्यसद्व्रतम्।
पूजनं पार्श्वनाथस्य, नववर्षप्रमाणकम् ॥10॥
जलगन्धाक्षतैः पुष्पैः नैवेद्यैः दीपधूपकैः।
फलार्घ्ये समभ्यर्च्य पूर्णव्रतं समाचरेत् ॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीं सूर्यव्रतनवमेवर्षे एकस्थानप्रोषधोद्योतनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्यमंत्र– ॐ नमो भगवते श्रीपार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतिसहिताय दुष्टग्रहशोकसर्वज्वररोगाल्पमृत्युविनाशनाय सूर्यव्रतोद्योतनाय नमः।
(उपरोक्त मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिये।)

जयमाला

त्रिभुवनपतिपूज्यं देवदेवेन्द्रवन्द्यं, जननमरणहारं पापसंतापवारं।
सकलसुखनिधानं सर्वदोषावसानं, फणिमणिसहितं तं संस्तुवे पार्श्वनाथम्॥1॥

अमरासुर नर सेवितचरणं, वन्दे पार्श्वजिनं नरशरणं।
दूरीकृतनरपापाचरणं, संसृति संभवजनदुखहरणं॥1॥
क्रोध मान माया संबरणं, संसाराम्बुधि तारण तरणं।
वारित जनमजराभयमरणं, तर्जितदर्शन ज्ञानावरणं॥2॥
कृत पंचेन्द्रिय द्विप वशकरणं, दर्शनज्ञानं चरिताभरणं।
येन सुविहितं सेतूद्धरणं, यत्र न स्यात् जरामाचरणं॥3॥
धर्माराम विवर्धनमेहं, नीलमणि प्रभु शोभित देहं।
सिद्धिवधू सम्भावित नेहं, नागनरामर वन्दित देहं॥4॥
धर्माधर्म प्रकाशन धीरं, मोहमहारिपु भंजन वीरं।
दुखदावानल शमन सुनीरं, दर्शित जनता भवजल तीरं॥5॥
महीचन्द्र यतिराजैर्महितं, मेरुचन्द्र स्तुतिवाक्यैः सहितं।
पापतिमिरनाशनरविभूरं, जयसागर वांछित सुखपूरं॥6॥

घत्ता– इति वरजयमाला, ये पठन्ति त्रिशुद्धया।
रविव्रत सुखकारं, कुर्वते ये नराश्च।
दिविजखगनरा वा ते लभंते नितान्तं।
सकलसुखसमाजं मोक्षसौख्यास्पदं च॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय दुष्टग्रहशोकसर्वज्वररोगाल्प–मृत्युविनाशनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिं च पुष्टिं च तुष्टिं च कल्याणं कमलाकरं।
पार्श्वनाथप्रसादेन, देयात् पद्मावती च सा॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

इति भट्टारक श्री महीचन्द्र शिष्य ब्रह्मश्री जयसागरविरचितं सूर्यव्रतोद्यापनं सम्पूर्णम्।

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पोस्ट कचनेर गट नं. 11-12, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय विधान
2. श्री रत्नत्रय आराधना
3. श्री नवग्रह शांति विधान
4. श्री वृहद् गणधर वलय विधान
5. श्री लघु गणधर वलय विधान
6. श्री पंचकल्याणक विधान
7. कुन्थु पार्श्व गणधर पूजा
8. श्री बाहूबली पूजा
9. श्री नवग्रह शांति चालीसा (छोटी)
10. श्री नवग्रह शांति चालीसा (बड़ी)
11. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा
12. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग-1)
13. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग-2)
14. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
15. सावधान (काव्य संग्रह)
16. श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ विधान (कल्याण मंदिर विधान)
17. श्री लक्ष्मी प्राप्ति त्रिकाल चौबीसी विधान (रोट तीज विधान)
18. श्री दीपावली पूजन
19. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (सूर्य ग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु आराधना)
20. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (चन्द्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
21. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (मंगल ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य आराधना)
22. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री शांतिनाथ आराधना)
23. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री आदिनाथ आराधना)
24. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत आराधना)
25. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
26. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ आराधना)
27. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ आराधना)
28. श्री विद्या प्राप्ति विधान
29. श्री विजय पताका विधान
30. श्री सर्वसिद्धी विधान
31. श्री भक्तामर विधान
32. श्री 96 क्षेत्रपाल विधान
33. श्री एकीभाव विधान
34. श्री तीस चौबीसी विधान
35. श्री कुन्थुगिरी पूजा
36. श्री चन्दन षष्ठी व्रत पूजा
37. श्री चन्द्रप्रभु आराधना
38. वात्सल्यमूर्ति (प.पू. ग.आ. राजश्री माताजी की स्मारिका)
39. श्री पंचमेरु, सोलहकारण, दशलक्षण विधान
40. लघु रत्नत्रय विधान
41. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
42. श्री शांतिनाथ विधान
43. श्री विषापहार विधान
44. श्री रविव्रत विधान
45. श्री महावीर विधान
46. श्री नंदीश्वर विधान
47. महासती चंदनबाला
48. महासती मनोरमा
49. महासती अंजना

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी.)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.)
14. गुप्तिनंदी मंघ हिट्स (एम.पी.3)

(1) पहला भव

कमठ को काला मुँह करके गधे पे बिठाया, कमठ कुतप करता हुआ, कमठ मरुभूति पर शिला पटकते हुए

(2) दूसरा भव

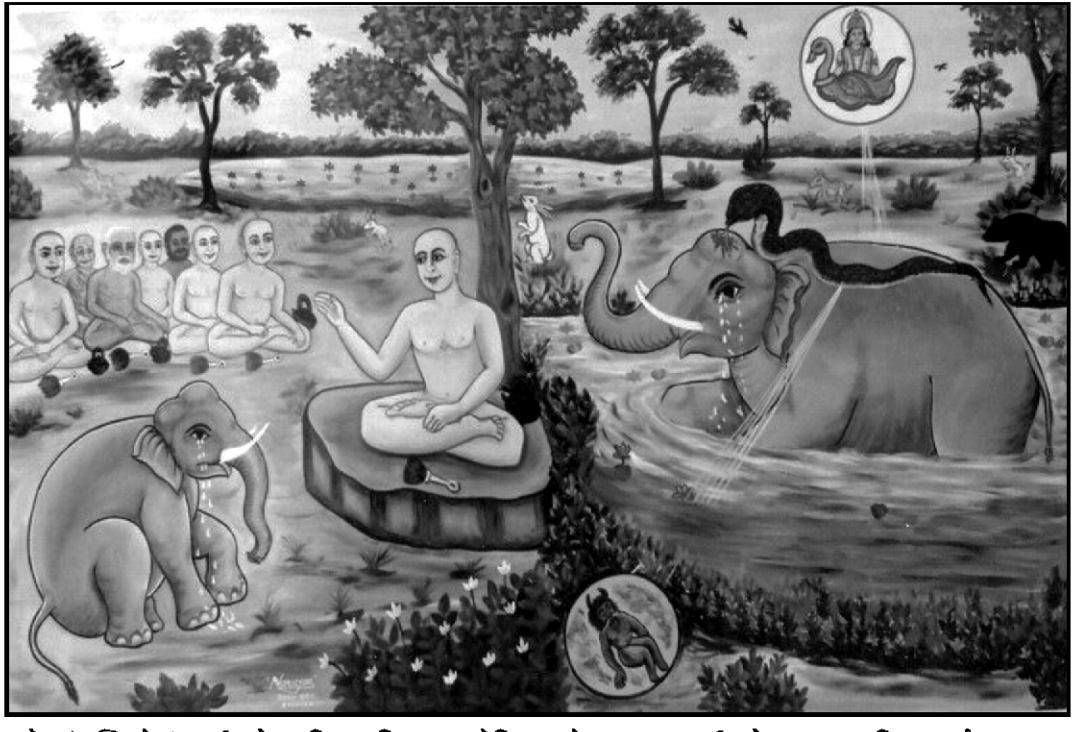

वज्रघोष (अग्निघोष) हाथी को अरविन्द मुनिराज सम्बोधित करते हुए। इधर हाथी को कुक्कुट जाति का सर्प डसता हुआ।

(3) तीसरा भव

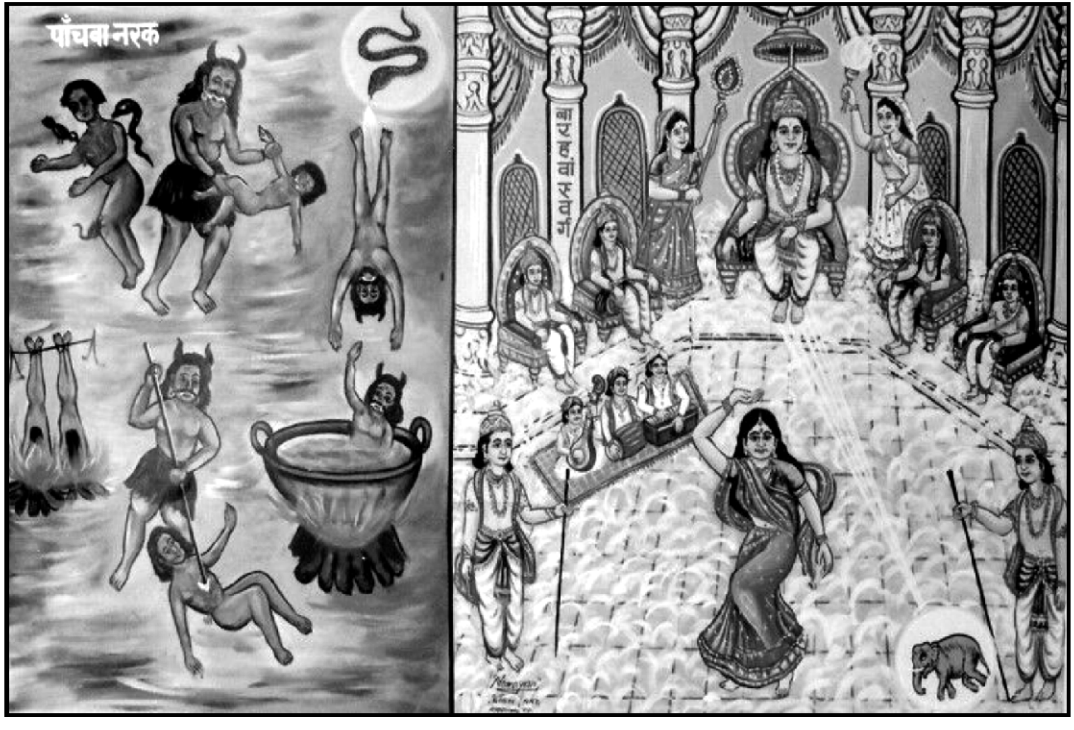

सर्प मरकर पाँचवे नरक गया, हाथी मरकर देव बना।

(4) चौथा भव

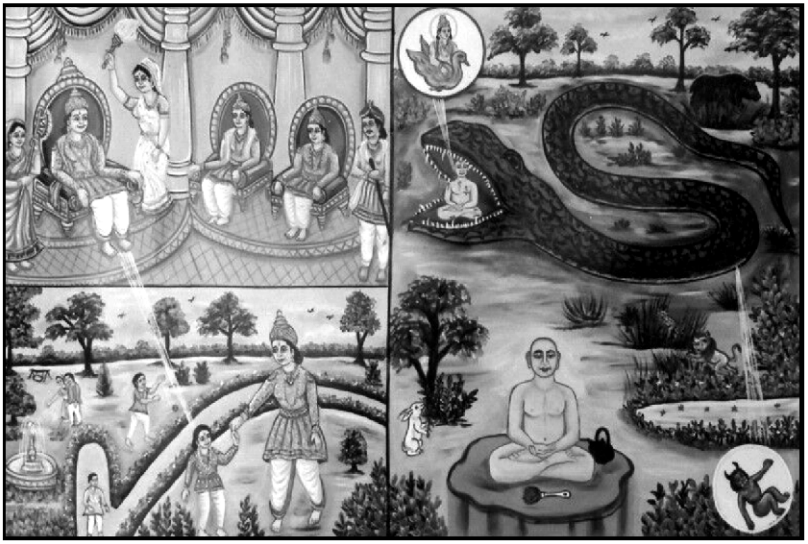

अग्निवेग महामुनिराज को कमठ का जीव अजगर बनकर निगलते हुए

(5) पाँचवाँ भव

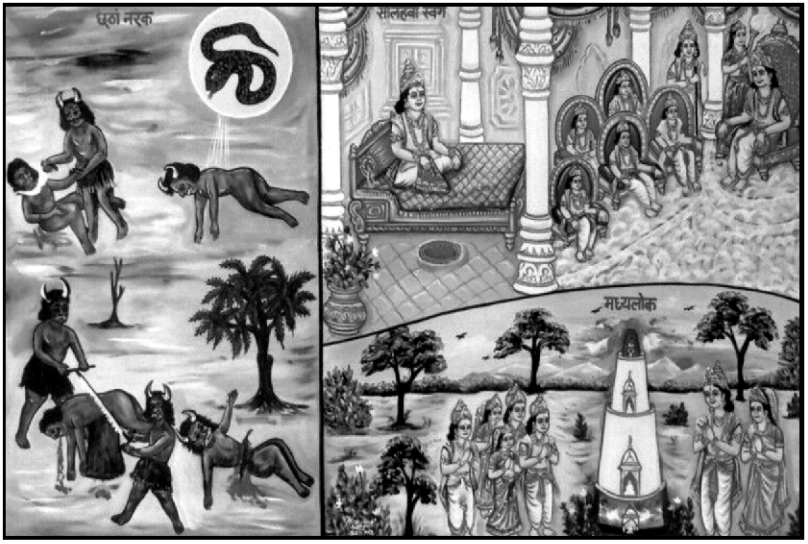

अजगर मुनि को निगल गया उसके पाप से छट्ठे नरक में गया।
मुनिराज समाधिमरण करके 16वें स्वर्ग में देव बने।

(6) छठा भव

मरुभूति का जीव पश्चिम विदेह में वज्रनाभि चक्रवर्ती बने। कमठ भील बनकर, वज्रनाभि मुनिराज पर बाण छोड़ते हुए

(7) सातवाँ भव

भील मरकर सातवें नरक गया। वज्रनाभि मुनिराज समाधिमरण करके मध्यम ग्रैवेयक में अहमिन्द्र बने।

(8) आठवाँ भव

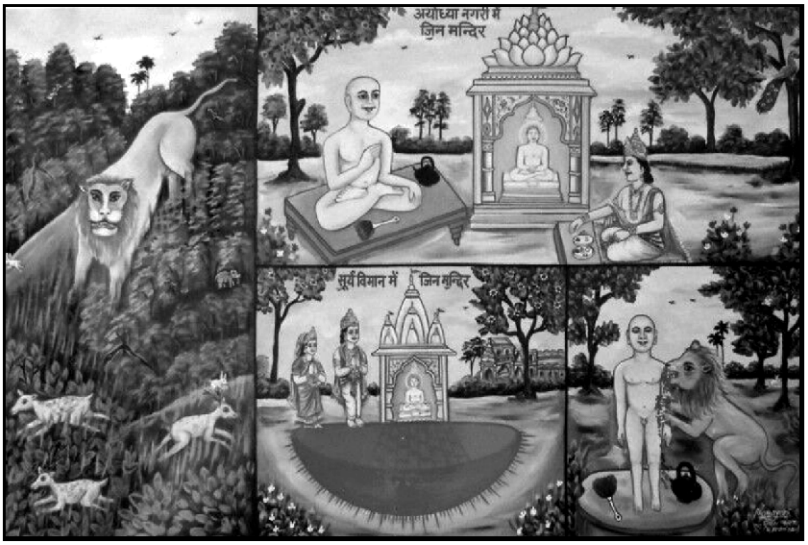

आनन्द मुनिराज को शेर भक्षण करते हुए।

(9) नवाँ भव

सिंह मरकर पाँचवें नरक गया। आनंद मुनिराज समाधिमरण करके प्राणत स्वर्ग में इन्द्र बनें।

(10) दसवाँ भव

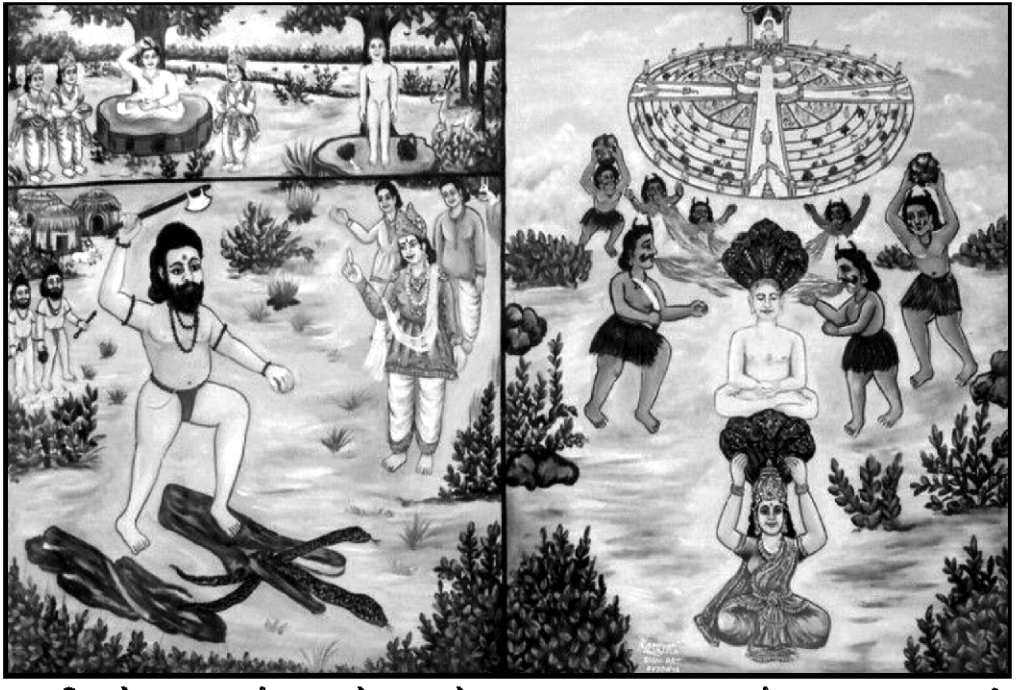

नाग-नागिन को युवराज पार्श्वकुमार णमोकार सुनाते हुए। श्रमण पारसनाथ पर उपसर्ग करता हुआ कमठ का जीव, उपसर्ग निवारण करते हुए धरणेन्द्र और पद्मावती

(10) दसवाँ भव - पार्श्वनाथ के जन्म नगर के चित्र

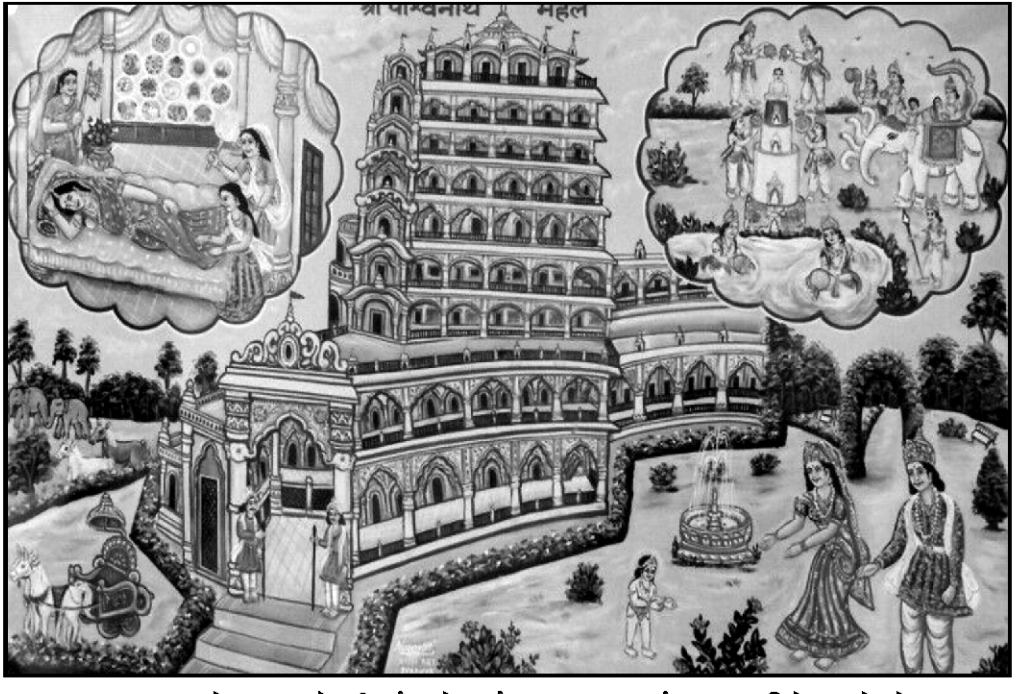

वामा माता सोलह स्वप्न देखती हुई। सुमेरु पर्वत पर बालक पार्श्वनाथ का अभिषेक करते हुये।
माता वामा देवी और पिता अश्वसेन बाल प्रभु को बुलाते हुए प्रभु के जन्म नगर का महल